जवान की दीपावली

[एकाकी-सग्रह]

ब्रज नारायण पुरोहित
एम ए (हिन्दी, सस्कृत),
एल-एल बी, पी-एच डी.

पुरोहित प्रकाशन
बीकानेर

दृष्टि : आभार

"जवान की दीपावली" एकाकी-सग्रह मे स्वरचित एकादश एकाकी नाटक सगृहीत है। ये एकादश भाव प्रसून विभिन्न रगो से युक्त होने पर भी एकीभूत सौरभ को वहन करने मे किस प्रकार समर्थ हुए हैं इसका निर्णय नीर-क्षीर-विवेकी सरस्वती-पुत्रो पर छोडना ही श्रेयस्कर होगा।

राष्ट्रीय-सकट के समय मे हमारे नेताओ ने उसका सामना एवं निवारण करने के लिए दृढता का रुख अपनाया और इस महायज्ञ के लिए प्रत्येक नागरिक की सहयोग-हवि का आह्वान किया। यही आह्वान मुझे कुछ अशो मे झकझोरने का कारणभूत हुआ तथा उसी का परिणाम प्रस्तुत सग्रह के कुछ एकाकी हैं। 'जवान की दीपावली' एकाकी के प्रणयन के प्रसग मे श्रद्धेय श्री मुकुलजी की अमर रचना "सैनाणी" मेरे मानस मे उथल-पुथल मचाती रही है।

× × ×

इस विषय मे अधिक न लिखकर इतना कहना चाहूगा कि इस सग्रह मे जो कुछ है वह मेरे स्व पूज्य पिताश्री, सर्वश्री विद्याधरजी शास्त्री विद्यावाचस्पति, नरोत्तमदासजी स्वामी, मोहन वल्लभजी पन्त, लक्ष्मी नारायणजी, हर नारायणजी व युगल नारायणजी जैसे समादृत गुरुजनो का ही प्रसाद है। श्री अगरचन्दजी नाहटा व श्री शम्भू दयालजी सकसेना ने सदैव ही मुझे लिखने की प्रेरणा दी अत उनका आभार मानना तो औपचारिक ही होगा।

एकाकी-साहित्य के अधिकारी विद्वान् डॉ रामचरणजी महेन्द्र का हृदय से आभारी हू जिन्होने मेरा उत्साह वर्द्धन करने हेतु इसका 'परिदर्शन लिखने का कष्ट करके शुभाशीर्वाद दिया है।

श्री वीरेन्द्र कुमार सकसेना, सचालक एजूकेशनल-प्रेस के अनवरत प्रयत्न से यह सग्रह इतना शीघ्र प्रकाशित हुआ है एतदर्थ उनका मैं आभारी हूँ।

× × ×

अन्त मे मैं यही निवेदन करना चाहूगा कि यह सग्रह जैसा भी बन पडा है, उसे ही प्रस्तुत कर इस समय सन्तोष का अनुभव कर रहा हू।

—ब्रज नारायण पुरोहित

हिन्दी विभाग,
डूंगर कॉलेज, बीकानेर
२ अक्तूबर, १९६७

जिनकी असीम कृपा व शुभा-
शीर्वाद ही इसमे फलित हुआ
है, उन्ही पूज्य गुरुदेव

नरोत्तमदासजी स्वामी

को सादर समर्पित

—ब्रज नारायण पुरोहित

परिदर्शन

डॉ० ब्रज नारायण पुरोहित के एकाकियो मे राष्ट्रीय और सामाजिक नवनिर्माण की दृष्टि प्रधान है। आपने अनेक भावो तथा समस्याओ को लेकर मौलिक एकाकियो की रचना की है। प्राय सभी राष्ट्रीय-नैतिक है और उनके मूल स्वर मे एक व्यवहारिक आदर्शवाद है। लेखक ने आज के जीवन मे से ऐसे मार्मिक क्षण पकडे है, जिन पर किसी भी प्रबुद्ध लेखक के लिए विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत सग्रह मे उनके राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक, गावो तथा शहरो से सम्बन्धित एकाकी सग्रहीत है।

उदाहरण के लिए "जवान की दीपावली" एकाकी मे कप्तान राजूसिह, जो युद्धभूमि से छुट्टी पाकर घर पर दीवाली का उत्सव मनाने आया है, रेडियो द्वारा पुन युद्ध का निमत्रण पाकर बिना घर रुके वीरोचित उत्साह से मातृभूमि का ऋण चुकाने चल देता है। राष्ट्रीय सेवा पर बलिदान की भावना मार्मिकता से स्पष्ट हुई है। इसी प्रकार "सोना और सकट" एकाकी मे कपिलदेव तथा सेठ की पुत्र-वधू वर्षा, चतुर्भुज और रामभुज आदि पात्र राष्ट्रवादी विचारो के है। उनके प्रभाव से स्थानीय कजूस सेठ के मन मे भी मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है तथा वह मातृभूमि रक्षा-कोष के लिए पर्याप्त सोना देने को उद्यत हो जाता है। "त्याग की बलिवेदी पर" एकाकी मे देश की मौजूदा खाद्यस्थिति का चित्रण हुआ है। अन्न को नष्ट करना जघन्य अपराध माना गया है। इस एकाकी का पात्र रमेशचन्द्र

सूचनिका

१.	जवान की दीपावली	१
२.	आपने मुझको बेच दिया	११
३	फासी का फन्दा	२५
४.	सोना और सकट	४१
५.	अजी सुना आपने	५५
६	त्याग की बलिवेदी पर	६७
७	मेहनताना	७९
८	मिलन	८९
९.	पहले कहते तो ··	९७
१०.	त्यागपत्र	१०५
११.	एक से एक बढकर	११५

नवान की दीपावली

पात्र

राजूसिंह	कप्तान
महावीरसिंह	राजूसिंह के पिता
श्रीपत	राजूसिंह का अभिन्न मित्र
उत्तरा	राजूसिंह की पत्नी
मालती	राजूसिंह की छोटी बहिन
मधु	नौकर ।

[**स्थान :** कप्तान राजूसिह का निजी बगला। चारो ओर फुलवारी मे आवृत्त होने के कारण नैसर्गिक छटा का-सा आनन्द लिया जा सकता है। राजूसिह की पदोन्नति कुछ माह पूर्व ही हुई है। उसके परिवार के सदस्य है—उसके वृद्ध पिता, नव-विवाहिता पत्नी व अविवाहिता बहिन मालती। मालती विद्यापीठ मे एम० ए० का अध्ययन कर रही है।

आज दीपावली का दिन है। चारो ओर प्रसन्नता का साम्राज्य है। सायकाल होने मे अभी घण्टे-डेढ घण्टे की देर है। ठण्डी हवा चलने लगी है। अत महावीरसिह लॉन से उठकर अपने कक्ष मे चले जाते हैं। वे विचार-मग्न हो जाते हैं। पास मे रेडियो से गाने आ रहे हैं। कुछ देर मे इन्जिन की सीटी सुनाई देती है। वे घडी की ओर देखते है और खिल उठते हैं। राजूसिह छुट्टी लेकर आ रहा है। वह सभवत इसी गाडी से पहुँचने वाला है। महावीरसिह (इन्जिन की) सीटी सुन कर उठ खड़े होते है व कमरे मे टहलने लगते हैं। कुछ देर बाद कोठी के बाहर मोटर का हार्न बजता है। वे उठकर बाहर जाते हैं। उसी क्षण कप्तान मोटर मे उतर कर तेजी से चलकर पिता के पावो मे गिरता है।]

राजूसिह : (चरण स्पर्श करते हुए) पिताजी, सादर प्रणाम

करता हू ।

महावीरसिह — (गद्गद होकर उठाते हुए) आओ मेरे राजू (सिर हाथ फेरते हुए) खुश रहो बेटा, युग-युग जीओ । व स्वास्थ्य तो ठीक है ?

राजूसिह — आपकी कृपा से सब ठीक है ।

महावीरसिह — तुम्हे बधाई है । (गौरव का अनुभव करते हुए) समाचा पत्रो मे तुम्हारा चित्र देखा था ।

राजूसिह — (नतमस्तक होकर) यह सभी तो आपका आशीर्वाद है । आपकी शिक्षा-दीक्षा ही तो मेरा सम्बल है ।

[श्रीपत प्रवेश करता है ।]

श्रीपत — (प्रवेश करके राजूसिह के गले से लिपट जाता है । फिर आश्वस्त होकर) क्यो भइया, सकुशल हो ?

राजूसिह — हा, तुमसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हू ।

श्रीपत — आजकल युद्ध तो बन्द होगा, तभी छुट्टी मिली होगी ?

राजूसिह — (कुछ रुककर) बन्द तो क्या, हाँ हमारी सबल सेनाओ के सामने शत्रु टिक नही सकते अत घुसपैठिये भेजते है, किन्तु इसमे क्या उन्हे मु ह की खानी नही पडेगी ?

[एक ट्रे मे चाय की सामग्री व दूसरी मे नमकीन-मिठाई रखकर मधु चला जाता है ।]

श्रीपत — (ट्रे को देखकर) वाह खूब ! मैं तो अच्छे शकुन लेकर आया हू ।

महावीरसिह — इसमे शकुन क्या करे । आज तो दीपावली है और फिर राजू के सकुशल आने मे अत्यन्त खुशी है । खाओ-पिओ बेटा, यह तुम्हारा ही घर है । तुम तो बहुत दिनो के बाद आये हो ।

श्रीपत — क्या बतलाऊ पिताजी, समय ही नही मिलता ।

राजूसिंह : (उठकर) आप चाय पीना भूल तो नही गए ?

[राजूसिंह उठकर चाय बना कर एक कप पिता को, एक श्रीपत को देता है । एक-एक प्लेट नमकीन-मिठाई की भी उनके सामने रख देता है फिर स्वयं एक कप अपने लिए चाय बनाकर लेता है ।]

श्रीपत (चाय की चुस्की लेते हुए) एक बात पूछूं भइया ?

राजूसिंह (कप को रखते हुए) एक क्यो, दो पूछो ।

श्रीपत : तुमको युद्ध मे भय नही लगता ?

राजूसिंह (हसकर) भय ! भय किसका ? ··· मनुष्यो का ? ·····नही-नही शत्रुओ का । ··· वीरता के आगे ··· हा-हा शक्ति के आगे भय कापकर भग जाता है। क्यो यही पूछना चाहते हो ?

श्रीपत (सकपकाकर) नही······· ·फिर हिचकिचाकर· ··· ··· · क्या वार पर वार देख कर भी तुम · · · ?

राजूसिंह अच्छा तो तुम कहना चाहते हो कि क्या हम मृत्यु से नही डरते ?

श्रीपत · (मौन रहता है ।)

राजूसिंह (प्रसन्नता से) तो सुनो । मृत्यु से भय की कौनसी बात है ? भगवान कृष्ण ने गीता मे अर्जुन को कहा है—"जातस्य हि ध्रुवोमृत्यु" (जो उत्पन्न होता है उसके लिए मृत्यु निश्चित है) और तुम जानते हो कि घर मे रहने से—कही छिपने से—क्या मृत्यु छोड देगी ?

श्रीपत पर मरना कौन चाहता है ?

राजूसिंह प्रिय मित्र, भूल रहे हो तुम शेक्सपियर के उस कथन को —'डेथ इज बट ए नेसेसरी एण्ड'— और फिर युद्ध मे आने पर तो दोहरा लाभ देती है—अपने कर्तव्य पालन से, देश-सेवा का व स्वर्ग-प्राप्ति का ।

श्रीपत · तुम तो भावावेश मे आ गए। मेरा तात्पर्य था कि बमो के महा-रव से, टैको की गडगडाहट से क्या कोई भय नही लगता ?

राजूसिंह यही तो भ्रम है (भावावेश मे आकर) गडगडाहट नगाडो का प्रतीक बन जाता है। हम शक्ति के अवतार बन जाते है, उस समय यमराज से लोहा लेने मे भी कोई हिच-किचाता नही। फिर युद्ध तो गान सदृश होता है, रण-चण्डी का नृत्य साक्षात् लक्षित होता है।

श्रीपत और खाना-पीना न मिले, उस समय ?

राजूसिंह · श्रीपत! तुम नही जानते कि सैनिक के लिए एक ही आदेश होता है— 'मर मिटो।' उस समय उसको न खाने का ध्यान रहता है, न पीने का। वह रणचण्डी का आह्वान करने लगता है। उसके सामने अर्जुन के समान केवल-मात्र चिडिया की आख—वह आख जिस पर उसे निशाना लगाना होता है—रहती है।

महावीरसिंह अरे सायकाल इन मरने-मारने की बातो मे क्यो उलझ पडे हो ? कुछ दिन तो आराम ....।

राजूसिंह : (विनम्रता से बीच मे बोल पडता है) पिताजी, क्षमा कीजिए, आराम हराम है। यह जीवन कर्मशाला है। फिर आपका पुत्र होकर आराम का पाठ कैसे पढू ?

श्रीपत : पिताजी, आपने स्वय भी तो रात-दिन "आजाद हिन्द फौज" मे उच्च पद को सुशोभित करते हुए कर्त्तव्य पालन किया है।

राजूसिंह · और बचपन मे दी हुई आपकी शिक्षा मैं भूला नही हू। प्राय आप श्रीमुख से नेताजी के उन शब्दो को दुहराया करते थे, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूगा' (तमतमा उठता है।)

श्रीपत पर अब तो भारत स्वतन्त्र हो चुका है।

राजूसिंह मित्र! तुम्हे आज क्या हो गया है? पढे-लिखे होकर ऐसी बाते कर रहे हो? क्या तुम नही जानते कि आज हमारे पडौसी हमारी स्वतन्त्रता पर घात लगाये बैठे है। हमे आज स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है, लोकतन्त्रीय व्यवस्था को सुदृढ बनाना है।

श्रीपत (यकायक रेडियो की ओर देखकर) अरे! रेडियो भी बज रहा है। बन्द कर दू?

राजूसिंह (भाव बदल कर, कुछ मुस्करा कर) देखा श्रीपत तुमने, क्या अब भी नही समझे कि युद्ध की अनुपम बातो को सुनकर जब श्रोता इतना लीन हो सकता है कि पास बज रहे रेडियो के गानो को भी नही सुन सके तो फिर बतलाओ अलौकिक युद्ध-गान का प्रत्यक्ष श्रवण व अनुभव करने वाला क्या अन्य बाते सोच सकता है?

महावीरसिंह (हस कर) रेडियो तो अपनी ही अपनी कहता है, दूसरो की नही सुनता। हजारो व्यक्ति भी यदि 'वन्स मोर' कहे तो भी नही सुनता।

[इस पर सब हसते है। श्रीपत रेडियो बन्द करने के लिए उठता है, इतने मे गडगडाहट की आवाज आती है और तत्काल कुछ अस्पष्ट किन्तु जोर की कोई घोषणा सुनाई देती है, इस पर राजूसिंह शीघ्र ही उसके पास पहुच जाता है।]

राजूसिंह (रेडियो के पास खडे होकर ध्यान से सुनने का उपक्रम करते हुए) है.... है .... यह क्या?

[रेडियो से स्पष्ट घोषणा सुनाई देती है।]

श्रीपत क्या है भइया?

राजूसिंह (चुप रहने का इशारा करके सुनता है) 'अभी अभी

पाकिस्तानी सेनाओ ने टैको आदि से लैस होकर हमारी सीमा पर बहुत बडा आक्रमण करके युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी है, इसलिए छुट्टी पर गए हुए सेना के सभी जवानो, अफसरो तथा कर्मचारियो को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपनी रेजीमेण्ट पर उपस्थित हो।··· · इसे सरकारी आदेश समझा जाय।'

(····· सुनकर उत्साह के साथ तो अब अवसर है अपना बल-पौरुष दिखाने का। दुष्टो ने··· ···भावावेश मे उठ खडा होता है।)

श्रीपत : (किंकर्त्तव्यविमूढ-सा होकर) क्या तुम भी जाओगे ?

राजूसिह (उल्लसित होकर) इसमे पूछने की क्या बात है ? मैं अभी घण्टे-डेढ घण्टे मे स्टेशन पहुँच जाऊगा और एक्सप्रेस से रवाना हो जाऊगा।

श्रीपत . क्या अभी ? (आश्चर्य से) दिवाली के दिन !

राजूसिह दिवाली ? दृष्टिकोण की भिन्नता है। मैं भी दिवाली मनाने जा रहा हू।

श्रीपत : पर युद्ध-क्षेत्र मे दिवाली कैसे मनेगी ?

राजूसिह कैसे मनेगी ? जवान की दिवाली जानते हो कैसे मनती है ? उसके लिए स्नेह (तेल) नागरिको के हृदयो मे उमडता रहता है। स्नेह से परिपूर्ण हृदय-दीपो मे भावनाओ की—सद्भावनाओ की—बत्ती प्रज्वलित होकर चक्षु-मार्ग से लौह को प्रकाशित करती है और वह अनुपम प्रकाश—सैनिक का उत्साह बढाते हुए प्रेरणा-स्रोत व मार्ग-दर्शक बन जाता है।

श्रीपत . किन्तु घर आकर बिना दीपावली मनाये जाना······

राजूसिह : (टोक कर) क्या अब भी तुम्हारी समझ मे नही आया कि सैनिक की दीपावली विजय मे मनाई जाती है। फिर

उसके लिए प्रत्येक दिन दीपावली होता है।

महावीरसिह शाबाश मेरे लाल—मेरे क्या मातृ-भूमि के लाल—माता के दूध की लाज रखना (कुछ सोचकर, भावावेश मे उठ कर), हा तो मै पुत्री उत्तरा को यह शुभ सदेश सुनाता हू—सुनाता हू कि आज एक खरा मोती परीक्षण के लिए ले जाया जा रहा है। (घर मे चला जाता है।)

राजूसिह श्रीपत ! अब हमे शीघ्रता करनी चाहिए। (बाहर झाककर) है—दीया-बत्ती का समय हो गया !

[राजूसिह उठकर द्वार तक आता है, उसी समय उसकी पत्नी उत्तरा प्रवेश करती है। उसके हाथ मे दीपो से सुसज्जित थाली है। थाली के बीच मे कुकुम-केसर रखे है व धूप सुवासित हो रहा है।]

उत्तरा (प्रवेश करके सकुचाती हुई) देव ! इस शुभ वेला मे पूजा स्वीकार करें। (आरती उतारती है) आज का शुभ दिन इस घडी से और भी मगलकारी हो गया है। (आसू छलक आते हैं।)

राजूसिह · प्रेमाश्रु बहाते हुए) उत्तरे ! कृतकृत्य हुआ। तुमने अपना नाम सार्थक किया।

उत्तरा . देव ···

राजूसिह · देवी ! मुझे याद आता है उत्तरा-अभिमन्यु का वह पावन-मिलन—युद्ध मे जाते हुए अभिमन्यु का उत्तरा द्वारा अर्चन-पूजन। इस थाली मे प्रकाशित बत्तिया मेरा मार्ग-दर्शन करेगी, अन्धकार मे प्रकाश दिखायेगी। उत्तरे···!

[मालती हाथ मे सूटकेस लिए हुए प्रवेश करती है।]

मालती : (अभिवादन करके मुस्कराती हुई) क्या दीपावली मनाई जा रही है ?

राजूसिह : हा, तुम भी आओ।

मालती भइया, कब आए ? दीपावली पर आकर अच्छा किया, अब आनन्द से मनायेगे ।

राजूसिह आज ही आया हू, और आज ही जा रहा हू ।

मालती (आश्चर्य से) कहा ?

उत्तरा (कुछ लजाकर) जहा से आए है ।

राजूसिह · इसमे विशेष बात क्या है । यह आने-जाने का क्रम तो जारी ही रहता है ।

मालती · (आश्चर्य से) तो क्या युद्ध-स्थल मे ?

राजूसिह (वस्तुस्थिति समझकर) और अब जा रहा हू मातृ-ऋण चुकाने के लिए, अपनी परीक्षा मे सफल होने के लिए । एक अलौकिक दीपोत्सव मनाने के लिए । (जाने को उद्यत होता है।)

मालती · (कुछ विचार कर)—भइया······ ! (इतना कहकर सूटकेस खोल कर जेब से छोटा-सा चाकू निकाल कर सोल्लास अपने अगूठे को चीरती है । उससे रक्त निकलने लगता है ।) तो लो भइया, भैया-दूज के शुभ एव पावन अवसर का तिलक अभी कर दू (तिलक करती है—उसकी आखे गर्वोन्नत हो जाती है जिनसे तेज चमकने लगता है । दो अमूल्य मोती ढुलक आते है) इस तिलक की लाज रखना भइया ! अपनी असख्य बहिनो की भावनाओ·········। (कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है ।)

राजूसिह . (मालती के सिर पर हाथ फेर कर सिर सू घता है, फिर रु धे हुए कण्ठ से) मालती···जवान की दी···पा··· ।

[पटाक्षेप]

आपने मुझको बेच दिया

पात्र

विष्णु प्रसाद	एडवोकेट (अभिभाषक)
प्रभा	विष्णु प्रसाद की पत्नी
भगवानदास	विष्णु प्रसाद का सजातीय
रामू	विष्णु प्रसाद का पुत्र
माया प्रसाद	विष्णु प्रसाद का मित्र
कमल स्वरूप	विष्णु प्रसाद का दामाद
मनोहर प्रसाद	कमल स्वरूप का पिता
वधू	कमल स्वरूप की नवविवाहिता पत्नी
पण्डित	विवाह-सस्कार सम्पादन कराने वाला

दृश्य १

[बाबू विष्णु प्रसाद की कोठी। आधुनिक ढग की साज-सज्जा से सुसज्जित, सामने उग रही दूर्वा के कारण इसकी शोभा मे कुछ वार्धक्य लक्षित होता है।

सन्ध्या-काल होने वाला है। कचहरी से आकर विष्णु प्रसाद अपनी बैठक मे बैठ जाते है। बैठक मुख्य दरवाजे के दाहिनी ओर है। वे आराम-कुर्सी पर लेट जाते है। आखो को मूदकर वे अपने आपको भूलना चाहते है। उसी समय उनकी पत्नी प्रवेश करती है।]

प्रभा (प्रवेश करके) आप इतने चिन्तित क्यो दिखाई देते है ?

विष्णु प्रसाद (चौक कर सम्हलते हुए) नही, कुछ नही, वैसे ही आराम कर रहा था।

प्रभा यो ही क्या ? मैं कुछ दिनो से देख रही हू कि आप अत्यन्त व्यग्र रहते है। स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिर रहा है, आप इस ओर ध्यान तक नही देते। आखिर

बात क्या है ?

विष्णु प्रसाद (निश्वास छोडकर) प्रभा ! क्या बताऊ ? मैं समझता हू कि मेरा अन्त निकट आ गया है। सामाजिक कुरीतियो से बाधित व्यक्ति के लिये इस ससार मे आश्रय का स्थान कहा है ? आज समाज के नियमो द्वारा समाज के व्यक्तियो का ही शोषण हो रहा है। सभी देखते हुए भी अनदेखा कर रहे है।

प्रभा क्या समाज की चिन्ता करने वाले हम ही बचे है ?

विष्णु प्रसाद : पर हम पर भी उत्तरदायित्व है। जब घर मे आता हू और कान्ता को देखता हू तो सिर भन्नाने लगता है।

प्रभा (जैसे कुछ स्मरण करके) कान्ता की चिन्ता तो मुझे भी दिन-रात लगी रहती है। आखिर उसके हाथ तो पीले करने ही होगे।

विष्णु प्रसाद : केवल हाथ पीले करने मात्र से काम नही चल सकता। इससे अधिक बहुत कुछ करना पडेगा।

प्रभा परन्तु आप प्रयत्न भी तो नही करते। कचहरी मे बैठते है, आपको प्राय समाज के सभी लोग जानते है।

विष्णु प्रसाद . यही तो रोग है। वकील समझकर और इस कोठी को देखकर समाज अधिक से अधिक शोषण करना चाहता है।

प्रभा . शोषण ?

विष्णु प्रसाद . हा, लडके वाले मु ह-मागा दहेज चाहते है। मेरी चौदह वर्ष की कमाई मे बनाई हुई यह कोठी उन्हे अखरती है। वकील, डाक्टर तो जैसे करोड़पति समझे जाते हैं।

प्रभा : बात तो सही है। (कुछ हसकर) वकील मुर्दों से भी

तो पैसे उधरा लेते है।

विष्णु प्रसाद : पर उन्हे क्या पता कि आज अधिकतर वकील तो ऐसे होते है जो बार-रूम की कुर्सियो को सफल बनाने के लिये कचहरी जाते है। घर लौटते समय यदि उनकी जेबो की तलाशी ली जाय तो सब्जी के पैसे मिलने भी कठिन है। आजकल तो हम जैनो के लिये भी बडी विकट समस्या है।

प्रभा . जाने दीजिये इन बातो को। (कुछ स्मरण करके)— आज बाबू राम प्रसादजी से बात नही हुई क्या ? कल आपने आज के लिये कहा था न ?

विष्णु प्रसाद (मानसिक उद्वेलन मे फस जाते है) ·· ·हा, वे आए तो थे, किन्तु न जाने मैं उस समय किस मूड मे था कि सारा काम चौपट हो गया।

प्रभा (अत्यन्त खिन्न होकर) चौपट हो गया ? यह क्या किया आपने ? आप तो समझदार हैं।

विष्णु प्रसाद (कुछ रुक कर) क्या बताऊ प्रभा, उसकी बातो ने मुझे झकझोर दिया।

प्रभा परन्तु चतुराई से काम बनाने ऐसा उन्होने क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद उन्होने कहा कि हम दहेज के रूप मे रोकडी तो कुछ नही लेगे। आपका और हमारा तो खीर-खाड का मेल है। हा, लडके की पढाई का खर्च विवाह के बाद से आपको सम्हालना होगा। उसे इन्जीनियर बनाना है।

प्रभा उस पर आपने क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद मैंने कहा कि लडका कमाकर फिर कमाई भी मुझे देगा ? इस पर वे बिगड गये।

प्रभा . बात तो ठीक कही आपने, परन्तु यह कडवा सत्य है।

फिर तो वे चले गए होगे ?

विष्णु प्रसाद नही, जब वे उठने लगे तो मैने उन्हे किसी प्रकार बैठाया।

प्रभा यह तो अच्छा किया आपने। फिर क्या बातचीत हुई ?

विष्णु प्रसाद क्या बताऊ उन्होने कहा कि आभूषणो के बारे मे हम कुछ नही कहते। लडकी आपकी है, जो कुछ आप देगे आपके घर मे ही रहेगा। विवाह तो आप अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार करेगे ही। समाज की रूढि थोडे ही तोडेगे ?

प्रभा तो फिर इसमे बतलाने की क्या बात है ?

विष्णु प्रसाद आज तो सभी उपदेशक बने हुए है। फिर कहा कि लडके को क्या पहनावेगे ?

प्रभा पहनावेगे क्या से क्या तात्पर्य ?

विष्णु प्रसाद · यही तो मैने उनसे पूछा।

प्रभा : तो उन्होने क्या बतलाया ?

विष्णु प्रसाद बताया कि लडके को सात-आठ तोले सोने की जजीर पहनाइयेगा या कम से कम पहनाना चाहे तो अच्छी से अच्छी घडी पहनानी पडेगी।

प्रभा . ये लोग यह क्यो भूल जाते है कि उनके भी लडकिया होती है। उस समय तो गरीब बनते है। क्या हमारी सामर्थ्य है कि हम इतना खर्च वहन करे ?

विष्णु प्रसाद · (निश्वास छोडते हुए) प्रभा, मैने उस नर-पिशाच को आवेश मे आकर कहा कि लालाजी, मैं तो हथकडी पहनाना जानता हू। हथकडी पहनवा सकता हू क्योकि दहेज मागना अपराध है। एक जघन्य सामाजिक अपराध और दूसरी चीज पहनाना-वहनाना मैं कुछ नही जानता।

प्रभा वे तो समाज-सुधार की बाते किया करते है ।

विष्णु प्रसाद · मैंने भी उन्हे लताडा कि आप समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति होकर ये बाते करते है । आप एक ओर तो 'जातीय-सदेश' मे सुधारवादी बनकर आदर्शवादिता के बडे-बडे लेख प्रकाशित करवाते है और दूसरी तरफ आपकी ये करतूते !

प्रभा (क्रोध से कापती हुई) ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक । और क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद बस, वे उठकर तेजी से चले गये ।

प्रभा तो और कोई सम्बन्ध देखिये ।

विष्णु प्रसाद (कुछ रुककर, स्मरण करते हुए) हा तो अभी लाला भगवानदास आने वाले है। उनका भतीजा विवाह-योग्य है ।

प्रभा · आप ही जाकर मिल लेवे ।

विष्णु प्रसाद . वे ही आवेगे और अवश्य आवेंगे क्योकि उन्हे कुछ कानूनी राय लेनी है । (घडी देखकर) ओह सात बज चुके है । बातो मे समय का तो पता ही नही लगता ।

प्रभा समय बीतते क्या देर लगती है ।

विष्णु प्रसाद बीता हुआ युग भी कल जैसा लगता है और आने वाला कल युग के समान लम्बा हो जाता है ।

प्रभा आपकी ये बाते मेरे तो समझ मे नही आती ।

[इतने मे मोटर का होर्न बजता है । विष्णु प्रसाद दरवाजे से झाकते हैं। फिर लाला भगवानदास को कोठी मे प्रवेश करते देखकर उठकर कमरे से बाहर जाते हैं । प्रभा रसोई मे चाय तैयार करने चली जाती है ।]

विष्णु प्रसाद (भगवानदास से हाथ मिलाते हुए) नमस्ते लालाजी,

आइये, बडी कृपा की आपने !

भगवानदास . नमस्ते जी ! इसमे कृपा की क्या बात है ? यह भी तो अपना ही घर है ।

विष्णु प्रसाद . यह तो ठीक है । फिर (आवाज देते है) रामू, ओ रामू !

रामू (प्रवेश करके) फरमाइये, बाबूजी ।

विष्णु प्रसाद जा, कुछ चाय-वाय तो ला ।

भगवानदास : (बीच मे बोलकर) नही-नही, यह सकोच मत कीजिये । फॉरमेलिटी की आवश्यकता नही ।

विष्णु प्रसाद : इसमे फॉरमेलिटी की क्या बात है ? आप कब-कब पधारेंगे ।

[आदेश पाकर रामू चला जाता है ।]

भगवानदास (कुछ सोचकर) तो बाई पढ रही होगी ?

विष्णु प्रसाद (सम्हल कर बैठते हुए) हा, प्रथम वर्ष विज्ञान मे पढ रही है । गृह-कार्य मे दक्ष है । आप देखना चाहेगे ?

भगवानदास नही-नही, अपन आजकल के लोगो जैसे नही है कि लडकी को देखे ।

विष्णु प्रसाद नही, इसमे कोई विशेष बात नही । आप भी तो उसके लिए पूज्य है ।

भगवानदास (चश्मे की डडी ठीक करते हुए) ठीक है, अब काम की कुछ बात कर लें ।

विष्णु प्रसाद . (नीची गर्दन करके) फरमाइये ?

भगवानदास देखिये वकील साहब, हम औरो की तरह भाव-तोल करना नही जानते । आज युग ही ऐसा आ गया है । महगाई का बोलबाला है, शिक्षा पर अत्यधिक खर्च करना पडता है । फिर पढे-लिखे लडको की

फरमाइशे ·········

विष्णु प्रसाद (क्रोध को रोक कर) आप कहना क्या चाहते हैं ?

भगवानदास कुछ नही। यही कहना चाहता हू कि आपका समाज मे नाम है। अधिक नही तो दो हजार का टीका होना ही चाहिये। घर-गृहस्थी के सामान की कहने की आवश्यकता नही। (कुछ रुककर) हा तो ट्राजि-स्टर व स्कूटर तो आजकल सभी देते ही है।

विष्णु प्रसाद (आवेश मे आकर) और कफन के पैसे भी ससुराल वाले पहिले से ही दे देते है। यह भी समझ लीजिये · ······

[यह सुनकर लाला भगवानदास शीघ्रातिशीघ्र बाहर निकल जाते हैं और मोटर मे बैठ कर प्रस्थान कर देते हैं। विष्णु प्रसाद भी बाहर दूब मे आकर टह-लने लगते हैं।]

विष्णु प्रसाद (टहलते हुए)·········क्या समय आया है। सभी जैसे आसुरी वृत्तियो के दास हो चुके है। मानवता को दानवता ने दबोच लिया है। ये लोग भगवान से भी नही डरते। (रुआसा होकर)·········मैं ······· ·मैं ········कहा से लाऊगा इतने रुपये ? ·········हा तो इज्जत बेचकर ? नही·········नही गिरवी रखकर······ लडकी के हाथ तो पीले करने ही पडे गे। (कुछ रुककर)·········ठीक है······ यह कोठी गिरवी रख दू गा।······ समाज लडके का जो मूल्य मागेगा, वही दू गा। लडकी के उत्पन्न होने का जो दण्ड दिया जावेगा उसे सहन कर लूंगा। (कुछ याद करके)·········अभी माया प्रसाद आने वाला होगा।·········अब ······ अब······ नही,

अधिक विलम्ब ठीक नही। पर मै कैसे ऋण मुक्त होऊंगा ? लडकी के जन्म लेने का यह दण्ड तो बहुत अधिक है। हे भगवान !............(धम्म से बैठ जाता है।)

[माया प्रसाद प्रवेश करता है।]

माया प्रसाद : क्यो, क्या बात है ? सुस्त कैसे बैठे हो ?

विष्णु प्रसाद (भाव बदलकर) सुस्त कहा हू ? वैसे ही प्राकृतिक सौंदर्य के अवलोकन मे मग्न हो रहा था। तुमने देरी कर दी !

माया प्रसाद देरी क्या ? पहले तो वे मिले नही, फिर बडी मिन्नत की, तब कही जाकर कुछ बात की। परन्तु......।

विष्णु प्रसाद . (बीच मे) परन्तु क्या ? स्पष्ट कहो न कि दहेज देना पडेगा। कितना खर्च लगने की सम्भावना है ?

माया प्रसाद (हिचकिचाते हुए) मित्र, (फिर रुक जाता है)... मैं तुम्हारी परिस्थिति जानता हू।

विष्णु प्रसाद ' किन्तु वे राक्षस तो इस पर ध्यान नही देते। वे तो पुत्र-जन्म को 'लॉटरी' समझते हैं। तुम तो पूरी बात बताओ।

माया प्रसाद क्या बताऊ......दस हजार के करीब खर्च गिनाया है, आगे.........।

विष्णु प्रसाद' आगे क्या ? जाकर कह दो कि स्वीकार है। माया प्रसाद का हाथ पकडते हुए) प्रिय मित्र जाकर कह दो कि स्वीकार है। विवाह भी शीघ्र कर दिया जायेगा। मैं रुपयो का प्रबन्ध कर लू गा।

माया प्रसाद (सिसकिया भरते हुए) विष्णु.........पर......

विष्णु प्रसाद (आसू गिरते है, फिर माया प्रसाद को गले लगाते हुए) क्या तुम नही मानोगे ?.........मान जाओ,

मित्र, जाओ, अभी जाकर उन्हे स्वीकृति दे दो। वे जैसा कहे गे, वैसा ही होगा।

[माया प्रसाद का प्रस्थान]

[पर्दा गिरता है]

दृश्य २

[स्थान वही। बाबू विष्णु प्रसाद के आगन मे विवाह-मण्डप रचा हुआ है। वर-वधू यथास्थान बैठे है। पण्डित विवाह करा चुके है व अपनी भेट-दक्षिणा आदि सामग्री को दुपट्टे मे बाध रहे है। हव्य का धू आ मागलिक-वातावरण को सुवासित कर रहा है। विष्णु प्रसाद व उनकी पत्नी प्रभा उठकर अन्य कार्यो मे लग जाने को तैयार हो रहे है। मगल-गीत गाये जा रहे है।

विष्णु प्रसाद प्रसन्न दिखाई दे रहे है, पर वस्तुत उनका मन भीतर से बहुत खिन्न है।

मण्डप के पास वर के पिता जाकर वर-वधू को आशीर्वाद देते हे। कमल स्वरूप चुप रहता है। उसके हृदय-सागर मे दावाग्नि धधक रही है। दूसरी ओर उसके पिता फूले नही समाते, बधाई देने वालो को रुपये बाट रहे है।]

मनोहर प्रसाद (विष्णु प्रसाद से) वकील साहब, जरा शीघ्रता कीजिये।

विष्णु प्रसाद जो आज्ञा ! (अन्दर जाने का उपक्रम करते हैं।)

मनोहर प्रसाद (पुत्र से) उकता तो नही गए ? अब तो थोडी ही देर है। कुछ रस्मे बाकी है।

कमल स्वरूप . (उठते हुए) फिर क्या कोई रस्म रह गयी है ?

मनोहर प्रसाद हा, बिरादरी का काम तो ढग से ही होगा। फिर घर चलेंगे। (हंस कर) इतनी उतावल क्यो कर रहे हो ?

कमल स्वरूप (आवेश मे आकर) करवा लीजिये रस्म पूरी और फिर घर चले जाइये। किसी रस्म की मन मे नही रह जाय आपके ?

मनोहर प्रसाद (अचम्भित होकर) कमल क्या कह रहे हो ? क्या हो गया तुम्हे ?

कमल स्वरूप : नही, कुछ नही, आप चले जाइये यह सारा सामान लेकर।

मनोहर प्रसाद : कमल ! बेटा.........बिरादरी की.........।

कमल स्वरूप : नही और लूट लीजिये, डाका डाल लीजिये। (खासने

लगता है ।)

मनोहर प्रसाद . कमल ! मेरे लाल ······तुम्हे·········

कमल स्वरूप : अब मै आपका कमल नही·······नही, कदापि नही । आप मुझे बेच चुके है । मेरा आना-पाई समेत मूल्य वसूल कर चुके हैं । आप स्वय मालदार बन चुके हैं, पर आपको क्या पता कि एक भद्र पुरुष को आप रक बना चुके है । आप उनकी इज्जत आबरू लूटने पर उतारू है । आप··· ···(होठ फडकने लगते है।)

मनोहर प्रसाद (कापते हुए)······कमल· ····इसमे इज्जत लूटने की क्या बात है ? बेटा देकर बेटी ली है ।

कमल स्वरूप यही तो मैं कह रहा हू कि आपने मुझे बेच दिया है । ठोक-बजाकर, मेरा मूल्याकन करवाकर, बढ़े सो पावे करवाकर मेरा विक्रय कर चुके है । वह मूल्य एक भद्र पुरुष को कितना महगा पडा है, आप नही जानते उस मूल्य के बदले मेरे श्वसुर की········ नही·· · नहीं ···अब से · ····· मेरे पिता की यह कोठी— जिसमे से उनके खून पसीने की कमाई मुझे फटकार रही है, गिरवी रखी गई है । (घम्म से अपने स्थान पर बैठ जाता है ।)

(सभी उपस्थित व्यक्ति चित्र-लिखित से खडे रहते है ।)

मनोहर प्रसाद बेटा······कमल··· ! पर (कमल का हाथ पकडना चाहता है ।)

कमल स्वरूप नही······नही· ····अब आपका बेटा नही रहा । इस कोठी को गिरवी रखवाने का कारण मै ही हू ।

इसलिये अपनी कमाई से पहले इसे ऋणमुक्त करके फिर आपके घर आऊगा, पहले नही कदापि नही ...आप अब जा सकते है। जा.. इ.. ये ।

[पटाक्षेप]

फांसी का फन्दा

पात्र

न्यायाधीश	सत्र एव जिला न्यायाधीश
मोहिनीमोहन	प्रसिद्ध एडवोकेट, रामदत्त अभियुक्त के अभिभाषक
राजकीय वकील	राज-वकील, पब्लिक-प्रोसीक्यूटर
रामदत्त	अभियुक्त
बुरका-युक्त औरत	साक्षी (बचाव-पक्ष)
चपरासी	न्यायालय का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

[**स्थान :** सत्र-न्यायालय का विशाल-कक्ष जिसके दो प्रवेश-द्वार है। दोनो द्वारो पर चिके लगी है। प्रवेश करते ही दर्शक दीर्घा है जहा कुछ बैचे पडी है। द्वार से लगभग पन्द्रह कदम की दूरी पर बीच मे एक मेज लगी है जिसके पास कुर्सिया पडी है। यह स्थान अभिभाषको के लिए है। सामने लकडी का एक बडा चबूतरा बनाया हुआ है और उस पर बडी मेज रखी हुई है, जिसके पास सामने की ओर न्यायाधीश महोदय की कुर्सी लगी हुई है। मेज के बाई ओर पेशकार व दाहिनी ओर शीघ्रलिपिक के बैठने का स्थान है। मेज पर मेजपोश लगा हुआ है।

अभिभाषको के खडे होने के स्थान के दोनो ओर अभियुक्तो के खडे होने के लिए लकडी के कठघरे बने हुए है।

मुख्य कक्ष से सटा हुआ न्यायाधीश का 'चेम्बर' है। दस बजे से ग्यारह बजे तक कार्यालय के कागजो पर हस्ताक्षर करने के लिए न्यायाधीश महोदय 'चेम्बर' मे बैठते है। मुख्य-कक्ष तथा चेम्बर के बीच मे एक द्वार है जो पर्दे से ढका रहता है। न्यायाधीश महोदय के आने-जाने का यही रास्ता है।

घडी के ग्यारह टकारे लगाते ही न्यायाधीश महोदय 'चेम्बर' से

न्यायालय मे प्रवेश करते है। सभी उपस्थित व्यक्ति खडे होकर अभिवादन करते है। वे अभिवादन का उत्तर देते हुए अपने आसन पर आसीन हो जाते है और डेली-कॉज लिस्ट (फहरिश्त मुकदमात) देखते है।]

न्यायाधीश (घण्टी बजाते हैं, फिर चपरासी के प्रवेश करने पर) पण्डित मोहिनीमोहन एडवोकेट व राजकीय-वकील को आवाज लगा दे और फिर हवालात से रामदत्त को बुला ला।

[चपरासी आवाज लगाता है जिसे सुनकर मोहिनीमोहन व राजकीय-वकील प्रवेश करते है। उनके साथ ही साथ लगभग चालीस व्यक्ति और प्रवेश करते है, जो दर्शक-दीर्घा मे बैठ जाते है। वे उदास-मुद्रा से काना-फूसी कर रहे है कि रामदत्त अब कुछ ही दिनो का मेहमान है, बेचारे को फासी के फन्दे पर लटकना पड सकता है।]

मोहिनीमोहन (पास आकर अभिवादन करते हुए) श्रीमान् ने याद फरमाया ?

न्यायाधीश हा, रामदत्त वाले मुकदमे मे बुलवाया है। (राजकीय-वकील की ओर देखकर) क्यो पी पी साहब, आप तैयार है ?

राजकीय-वकील जी हा।

[इतने मे कक्ष के बाहर हथकडी खुलने का शब्द होता है। कुछ क्षणो मे दो पुलिस वाले रामदत्त के साथ प्रवेश करते है। एक ने उसका हाथ पकड रखा है। दूसरा पीछे पीछे चल रहा है। दोनो चबूतरे के निकट पहुँच कर सेल्युट करते है। रामदत्त कठघरे मे घुस कर सिर झुका कर

अभिवादन करता है।]

न्यायाधीश . (हाथ उठाकर अभिवादन का उत्तर देते हुए रामदत्त की ओर देखते है) आज तुम्हारा कथन अकित किया जावेगा अत प्रत्येक प्रश्न को ध्यान से सुन व समझ कर उत्तर देना।

रामदत्त (सिर नीचा करके चुपचाप गभीर-मुद्रा मे खडा रहता है।)

न्यायाधीश : (टकित-पत्रो को हाथ मे लेकर पढते हुए) नाम तुम्हारा ?

रामदत्त · जी, रामदत्त।

न्यायाधीश पिता का नाम ?

रामदत्त जी, श्री देवीदत्त।

न्यायाधीश . जाति ?

रामदत्त हिन्दू।

न्यायाधीश . व्यवसाय ?

रामदत्त राजकीय सेवा, पर अभी निलम्बित किया हुआ हू।

न्यायाधीश निवासी ?

रामदत्त यही का।

न्यायाधीश (प्रश्न को पढते है) तुम्हारे विरुद्ध यह अभियोग लगाया गया है कि तुमने दिनाक ३ व ४ जनवरी, सन् १६६४ ई० की मध्य रात्रि मे श्री बाल किशोर की उसके मकान मे प्रविष्ट होकर हत्या की। तुम्हे इसके विषय मे क्या कहना है ?

रामदत्त यह अभियोग बिल्कुल झूठा है।

न्यायाधीश साक्षी सख्या एक विद्यावती का कहना है कि घटना के समय उसने अपने पति के चिल्लाने की आवाज सुनी और वह तुरत जगी तो तुम्हे लाठी

से उसे मारते देखा। उसने छुड़ाना चाहा पर तुमने उसे भी जान से मारने की धमकी दी। इस पर उसने जोर-जोर से 'मारे रे, मारे रे' चिल्लाना आरम्भ किया। उसने ऐसा क्यो कहा है ?

रामदत्त : बिल्कुल झूठ कहा है। इसके बारे मे मैं आगे बतलाऊगा (कुछ रुक कर) नही तो सफाई के गवाह से भण्डाफोड करवा दूगा।

न्यायाधीश : साक्षी सख्या दो महीदत्त का कथन है कि उसका मकान बाल किशोर के मकान से सटा हुआ है। घटना के समय उसने रोने-चिल्लाने की आवाज सुनी और वह बाल किशोर के मकान के द्वार तक पहुँचा ही था कि तुम उसके मकान मे से निकलते हुए दिखलाई दिये। तुम्हारे हाथ मे लाठी थी। उसने तुम्हे रोकना चाहा पर तुम भाग गए। इस के लिए तुम्हे क्या कहना है ?

रामदत्त . गवाह झूठ कहता है। इससे मेरी शत्रुता है। इसके विरुद्ध जूए के मुकदमे मे मैने साक्षी दी थी जिसमे उसे पचास रुपये जुर्माने की सजा हुई थी। इस तथ्य को वह स्वय स्वीकार कर चुका है। इसी कारण उसने झूठी गवाही दी है।

न्यायाधीश साक्षी महिमदत्त का कथन है कि ३ जनवरी को शाम के करीब सात साढ़े-सात बजे तुम्हारी बाल किशोर से रुपयो के लेन-देन के विषय मे लडाई हो रही थी। उसने तुम्हे छुडाया उस समय तुम उसे (बाल किशोर को) यह चेतावनी दे गए थे कि अभी बच गए तो क्या हुआ, सावधान रहना जान से मार दूंगा। यह गवाह तुम्हारे विरुद्ध

क्यो कहता है ?

रामदत्त : यह पुलिस का पेटेण्ट गवाह है। यह पुलिस की ओर से चौदह मुकदमो मे गवाही दे चुका है। इसका व्यवसाय चोरी करना व जूआ खेलना है। अभी भी इसके विरुद्ध चोरी के अभियोग मे एक मुकदमा दण्डनायक प्रथम श्रेणी के न्यायालय मे चल रहा है।

न्यायाधीश डॉ० एस० पी० वर्मा का कथन है कि पुलिस के पेश करने पर उन्होने बाल किशोर की शव-परीक्षा की। उसकी मृत्यु लाठी की चोटो से हुई थी व सिर की हड्डी टूट चुकी थी। यही उसकी मृत्यु का कारण था। वे ऐसा क्यो कहते है ?

रामदत्त . डाक्टर साहब झूठ कहते है। वे एस० पी० साहब के अभिन्न मित्र है और मैं कुछ नही जानता।

न्यायाधीश साक्षी फ़ैज़ मोहम्मद का कथन है कि उसने नक्शा-मौका तैयार किया, इस पर तुम्हारे हस्ताक्षर है। क्या कहना है ?

रामदत्त . ठीक है। हस्ताक्षर मेरे है पर यह नक्शा थाने मे तैयार किया गया था।

न्यायाधीश साक्षी कृपाण शकर का कथन है कि उन्होने इन कपडो का (जो बाल किशोर के बतलाये जाते है व घटना के समय पहने हुए बतलाये जाते है) रसायनिक विधि से परीक्षण किया और पाया कि वे मानवीय रक्त से रजित थे। इसके बारे मे क्या कहना चाहते हो ?

रामदत्त (आवेश मे) मुझे पता नही।

न्यायाधीश : तुम्हारी पत्नी विनोद प्रभा साक्ष्य सख्या सात का

कथन है कि उसी रात्रि को जब तुम हडबडाये हुए आये तो उसने तुम्हारी घबराहट का कारण पूछा तो तुमने उसे सम्पूर्ण विवरण बता दिया और कहा कि मै बाल किशोर को उसकी करनी का फल चखा आया हूं। इस साक्षी के न मानने का क्या कारण है ?

रामदत्त (आवेश मे आकर) क्या अब भी मैं उत्तर देने योग्य रह गया हू। मेरी पत्नी, नही-नही वह कुलटा मेरे विरुद्ध न्यायालय में आकर एक झूठे मुकदमे मे साक्षी दे और मुझे फासी के तख्ते पर लटकवाने का षड्यन्त्र करने वालो का साथ दे, इससे बढकर लज्जा की बात मेरे लिए और हो ही क्या सकती है ? (उसकी आखो मे आसू आ जाते है।)

न्यायाधीश : रामदत्त, तुम्हे जो कुछ कहना है, साफ-साफ बिना किसी भय के कहो।

रामदत्त · (आश्वस्त होकर) श्रीमान् इस प्रश्न का उत्तर कि उसने मेरे विरुद्ध गवाही क्यो दी—अत मे दूगा।

न्यायाधीश · गवाह श्री हरिसिंह थानेदार का कथन है कि उसने इस मुकद्दमे की जाच की व तुम्हारे विरुद्ध यथेष्ट प्रमाण होने के कारण तुम्हारा चालान अदालत मे एस० पी० साहब की स्वीकृति से पेश किया। इसके बारे मे तुम क्या कहना चाहते हो ?

रामदत्त · वे झूठ कहते है। एक निरपराध के विरुद्ध फाँसी का फदा डालने का कुचक्र रचा गया है। जहा ईश्वर का भय नही वहा ये लोग मनुष्यो से तो

क्या डरेंगे ।

न्यायाधीश अन्तिम गवाह श्री मुक्तासिह एस० पी० का कथन है कि उन्होने जाच द्वारा तुम्हारे विरुद्ध यथेष्ट प्रमाण पाये और अपने हस्ताक्षरो से मुकद्दमा न्यायालय मे पेश करवाया । इस गवाह को न मानने की क्या वजह है ?

रामदत्त जज साहब, क्या बताऊ ? आप मालिक है, न्याय-मूर्ति हैं । ऐसे कुकर्म करने वाले का तो नाम लेना भी मैं नही चाहता, किन्तु ससार की रीति ही ऐसी है । जहा चोर स्वय चोर-चोर चिल्लाता हुआ भाग रहा हो—वहा चोर का पकडा जाना कठिन होता है ।

न्यायाधीश (बीच मे बोलते हुए) तुम कहना क्या चाहते हो ? स्पष्ट रूप से कहो । यह उपदेश देने की जगह नही है ।

रामदत्त श्रीमानजी, मैं समझता हू कि मेरा अन्तिम समय निकट आ गया है । यदि आप पूछ रहे हैं तो सुनिये—(रुक जाता है) ...

न्यायाधीश देखो रामदत्त, शीघ्रता करो । केवल-मात्र तुम्हारा ही मुकद्दमा इस न्यायालय में नही है ।

रामदत्त क्या बताऊ, जहा पैसे के पीछे ससार पडा हुआ है, किसी के घर डाका डालकर उसे ही डाकू घोषित किया जाय, ऐसी ही कुछ परिस्थिति मेरी है । मेरी दयनीय दशा पर आपको तरस आयेगा । मेरी पत्नी— ......नही-नही. अब उसी मुक्तासिह की, विद्यावती मेरे विरुद्ध आपके समक्ष पेश की

गई। पर इसमे दोषी मैं उस दुष्ट को ही समझता हू जिसने एक भारतीय रमणी के सतीत्व को लूटा। भय व लालच से उसे जाल मे फसाया गया। परन्तु—— परन्तु ····· मैं चाहता हू कि ········(धम्म से गिर पडता है व रोने लगता है।)

न्यायाधीश · अब रो रहे हो, पहले क्यो नही सोचा ?

मोहिनीमोहन श्रीमान्, इतनी शीघ्रता से निर्णय पर पहुँचना न्याय के साथ खिलवाड करना होगा। जब आप पूरी बात सुनेगे तथा सफाई पेश की जावेगी तभी आप समझेंगे कि वास्तविकता क्या है। अभी तक तो इकतरफा बात कागजो मे आई है। आप देखेंगे कि किस निर्दयता से एक गरीब कर्मचारी को, जिसका कोई सहारा नही एक जघन्य अपराध का अभियुक्त बनाया गया। उसकी पत्नी का सतीत्व लूटा गया, उसकी मानसिक शान्ति नष्ट की गई और इतने पर भी जब सतोष नही हुआ तो न्याय की दुहाई देकर उसे कलकित करके मृत्युदण्ड दिलाने की योजना बनाई गई।

न्यायाधीश यह आप किस आधार पर कह रहे हैं ? क्या आपके पास कोई पुष्ट प्रमाण है ?

मोहिनीमोहन जी, है। मै समझता हू कि मुकद्दमे के सम्पूर्ण हालात आपके सामने आने पर आप उन सभी साक्षियो को अभियुक्त बनाकर इसी कटघरे मे खडा करने के लिये बाध्य हो जावेंगे जिसमे अभी रामदत्त खडा है और रामदत्त को मान सहित

रिहा कर देंगे।

न्यायाधीश आप कह क्या रहे हैं ?

मोहिनीमोहन : श्रीमान्, मैं यही निवेदन करना चाहता हू व आशा करता हू कि आप अभियुक्त की दयार्द्र स्थिति को समझेंगे व सहानुभूतिपूर्वक न्याय करने की कृपा करेंगे। मैं मानता हू कि न्यायाधीश देवता होता है। उन्हे न्याय करना होता है, और ऐसा न्याय जो दया से परिपूर्ण हो।

राजकीय-वकील यह सारी बाते आप किस आधार पर कहे जा रहे है ? इस प्रकार का क्या कोई भी प्रमाण आपने पेश किया है ?

मोहिनीमोहन वह भी पेश किया जायेगा। अभी वह स्थिति आई ही कहा है ? अभी तो अभियुक्त का कथन चल रहा है।

न्यायाधीश आप बीच मे ही क्यो उलझ रहे है ? आपका कर्त्तव्य न्याय करवाने मे सहयोग देना है। आप जानते ही हैं—"दि ओनली डिफरेन्स बिटवीन दि बैंच एण्ड दि बार इज देट देअर इज बार बिटवीन दि टू।"

मोहिनीमोहन यह तो ठीक है, पर श्रीमान्, 'जस्टिस टेम्पर्ड विद् मरसी' वाले सिद्धान्त को भी हृदयगम किया जाना चाहिये।

राजकीय-वकील : आप मान्य न्यायाधीश महोदय को शिक्षा नही दे सकते।

मोहिनीमोहन : (जोर से) और आप भी मुझे कुछ नही कह

सकते। मुझे अधिकार है कि मैं अभियुक्त के हितो का सरक्षण करू ।

न्यायाधीश अच्छा तो अब आप शान्त रहिये। (रामदत्त को लक्ष्य करके) हा, तो तुम्हारी पत्नी तुम्हारे विरुद्ध क्यो कहती है ?

रामदत्त . (आसू पोछते हुए) जज साहब ! क्या कहू ? कहते हुए लज्जा आती है। मै अनुभव करता हू कि मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने के पूर्व ही मर जाना चाहिये था...... ।

न्यायाधीश : पर उत्तर तो देना होगा।

रामदत्त श्रीमन् एक पत्नी अपने पति के विरुद्ध साक्ष्य दे इससे अधिक और क्या दण्ड हो सकता है। (आवेश मे आकर) —उस दुश्चरित्रा, पापिनी का मै नाम लेना तो दूर रहा, सुनना भी नही चाहता। आज सीता व सावित्री के देश मे यह अनैतिकता। किन्तु इसमे उसका दोष नही, दोष है सम्पत्ति का, सत्ता का व फैशन का... । (रुककर) फिर एक अवस्था होती है जिसमे स्त्री हो या पुरुष, प्राय भटक ही जाते है या उन्हे पथ-भ्रष्ट होने के लिये विवश कर दिया जाता है। आज......(कण्ठ रुद्ध हो जाता है।)

न्यायाधीश तुम्हे कई वार कह दिया है कि अपने बयान को धर्मोपदेश का माध्यम मत बनाओ। स्पष्टीकरण करते हुए शीघ्रता करो।

रामदत्त · मान्यवर, मैं यही तो वतना रहा था कि श्री मुक्तासिह ने अपने रूप-यौवन, धन तथा प्रभुता के

मद मे न जाने कितने कुकर्म किये हैं व कर रहा है। उसकी इस शिकारी प्रवृत्ति का शिकार यदि मैं बन जाता तो आज यह स्थिति सामने नही आती परन्तु ......।

न्यायाधीश : क्या ?

रामदत्त जी, सच कहता हू। मैंने अपने गौरव को किसी भी मूल्य पर बेचने से इन्कार कर दिया। आप समझ गए होगे कि उसने मेरी पत्नी को पथ-भ्रष्ट किया और मुझे—राह के काटे को—नष्ट करना ही श्रेयस्कर समझा। मेरे विरुद्ध कई शिकायते करवाई, मेरे अफसरो को मेरे विरुद्ध कार्यवाही करने को उकसाया, परन्तु दुर्भाग्य से अभी तक जीवित हू।

न्यायाधीश इसका कुछ आधार है ?

रामदत्त जी, पेश करूंगा। सबूत भी पेश करूंगा। उसने उस दुष्टा को अलग मकान दिलवाया, मुझ से अलग किया और यह प्रचार करवाया कि मै उसे मारता-पीटता हू किन्तु श्रीमान्! आप देख रहे है मेरे पौरुष को—मेरी इस... (बेहोश-सा होकर गिर पडता है।)

न्यायाधीश रामदत्त... .....

[इस पर पुलिसवाले उसे उठाते है व पानी छिडकते हैं। कुछ होश मे आने पर एक गिलास पानी पिलाते हैं।]

मोहिनीमोहन सर, यदि अभियुक्त आज बयान देने मे असमर्थ है तो कल की तारीख रख दे।

रामदत्त (उठकर) नही, कोई आवश्यकता नही आगे

तारीख देने की। मैं मरने को प्रस्तुत हू। जितना चाहे, पूछिए।

न्यायाधीश (सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से) हा तो तुमने यह नही बताया कि बाल किशोर की पत्नी विद्यावती तुम्हारे विरुद्ध गवाही क्यो देती है ?

रामदत्त . वह भी उसी रोग से पीडित है जिससे मेरी तथा-कथित दुष्टा। मुक्तासिह उसके माध्यम से बाल किशोर की सपत्ति हडपना चाहता है।

न्यायाधीश और कुछ कहना चाहते हो ?

रामदत्त . अब और क्या कहना बाकी रहा है, श्रीमान् ?

न्यायाधीश क्या कोई बचाव-साक्षी पेश करनी है ?

रामदत्त · जी हा, आज ही—अभी पेश कर दू गा।

न्यायाधीश (प० मोहिनीमोहन की ओर देखकर) क्यो पण्डितजी, अभी पेश कर दे गे ?

मोहिनीमोहन . हा, आवाज लगवा लीजिये।

न्यायाधीश . नाम क्या है गवाह का ?

मोहिनीमोहन नाम तो क्या, बाहर एक औरत बैठी है। वही गवाह है।

न्यायाधीश (मुस्करा कर) क्या सफाई मे औरत की गवाही करवायेंगे।

मोहिनीमोहन · जी हा, और औरत भी बुरके वाली है।

न्यायाधीश : (घण्टी बजाते है, अत चपरासी आता है) देखो, बाहर एक बुरके वाली औरत है उसे जल्दी बुला लो।

[चपरासी बाहर जाता है फिर प्रवेश करके न्यायाधीश के सामने आता है।]

चपरासी साहब, बाहर तो वह औरत दिखाई नही दी।

[इतने मे काला बुरका ओढे हुए एक औरत प्रवेश करती है और न्यायाधीश के सामने— पण्डित मोहिनीमोहन के पास जाकर खडी हो जाती है।]

न्यायाधीश (उसे देखकर) कौन हो तुम ? क्या सफाई देने आई हो ?

औरत जी हा।

[इतना कहकर अपना बुरका उतार कर अलग रख देती है और सब के देखते-देखते उसमे से एक पुरुष निकल आता है। सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं।]

न्यायाधीश (आश्चर्य से) क्या बाजीगरी करने आई हो ? क्या बात है ?

पुरुष सर, मैं गवाह बाल किशोर हू—वही बाल किशोर हू जिसकी हत्या करने का अभियोग निर्दोष रामदत्त पर लगाया गया है। उसी दुष्ट मुक्तासिह के कुचक्रो व कुकृत्यो का परिणाम है कि मै छ माह से अज्ञातवास कर रहा हू। चाहता था बदला लेना किन्तु ऐसा अवसर नही आया।

न्यायाधीश (भौचक्के से होकर) क्या' ····क्या ?

पुरुष . जी सत्य कहता हू मेरे अज्ञातवास को उन्होने सुअवसर जाना। मुझे मरा हुआ सिद्ध करवाकर

मेरी समस्त सपत्ति पर आधिपत्य करना चाहा। एक ही तीर से दो शिकार करने चाहे। मेरा व रामदत्त का जीवन नष्ट कर दिया उस दुष्ट ने। पर भगवान के घर देर है—अन्धेर नही। उस दुष्ट ने·........

[न्यायाधीश भौचक्के से बैठे रहते है। सभी उपस्थित जन-समुदाय चित्रलिखित-सा देखता रहता है।]

[पटाक्षेप]

सोना और संकट

पात्र

सेठ	स्थानीय सेठो मे सबसे अधिक सपत्तिशाली
मुनीम	सेठ का मुनीम
जगन्नाथ	सेठ का समर्थक
कपिलदेव	विचारशील व्यक्ति
वर्षा	सेठ की पुत्र-वधू, सुरेश की पत्नी
चतुर्भुज व रामभुज	सामाजिक कार्यकर्त्ता
माधो	सेठ का नौकर

[**स्थान :** पुराने ढग की बनी हुई पत्थर की भव्य हवेली। मुख्य-द्वार तक पहुँचने मे पाच सीढिया पार करनी पडती है। मुख्य-द्वार के दाहिनी ओर दीवानखाना है। आधुनिक ढग की साज-सज्जा से सुसज्जित होने पर भी उसकी बिछावट देशी ढग की है। मेज-कुर्सी के स्थान पर पूरे कमरे मे एक गद्दा बिछा हुआ है। दीवार के सहारे गोल तकिये रक्खे हुए है। बाई ओर मुनीम के बैठने का स्थान है। पास ही तिजोरी रक्खी हुई है, उसके पास वहियो का ढेर लगा हुआ है। दीवानखाने का एक दरवाजा घर मे खुलता है। आज दीवानखाने मे चहल-पहल है क्योकि सेठजी बम्बई से आए है। उनकी बडी-बडी मिले कई नगरो मे चल रही हैं। स्थानीय सेठो मे ये सर्वाधिक सम्पत्तिशाली है। धर्म के नाम पर एक ट्रस्ट बना रखा है जिसका उद्देश्य अपनी 'वाह-वाही' करने वालो को 'पत्र-पुष्प' से सन्तुष्ट करना है। करीब दस बजे दो व्यक्तियो (जगन्नाथ व कपिलदेव) के साथ वे दीवानखाने मे प्रवेश करते हैं और आकर यथास्थान बैठ जाते है। उनका नौकर भी घर मे से आकर उनकी सेवा मे उपस्थित हो जाता है।]

सेठ · (बैठकर) माधो, जा कुछ खाने-पीने को ला।

मुनीम · अभी तो चाय से ही काम चल जाएगा ?

सेठ · कोरी चाय से काम नही चलेगा। चाय मे होता ही क्या है, गर्म पानी और चीनी। दूध तो उसमे नाम-मात्र को होता है।

जगन्नाथ . फिर आज के फैशन के हिसाब से तो एक प्याले मे सोलह बूंद से अधिक दूध नही होना चाहिए।

सेठ (हसकर) देखिये मुनीम जी, बन्धु-जनो से कई वर्षो के बाद मिलना हुआ है इसलिए केवल गर्म पानी से आतडिया जलाकर ही उन्हे नही टरकाना चाहिए।

जगन्नाथ : सुना मुनीम जी सेठ साहब का कथन। इसे कहते है हृदय की विशालता।

[इस पर मुनीम माधो को रुपये देकर बाजार से मिठाई आदि लाने के लिए समझाकर भेज देता है।]

सेठ . क्यो मुनीम जी खाता-रोकड आदि तैयार हो गए ?

मुनीम · कुछ बाकी है।

सेठ तो काम कैसे पार पडेगा ?

मुनीम : जल्दी करेगे।

सेठ : हा, इन्कम-टेक्स आफिस मे सारे आकडे पेश करने है। अब साल समाप्त होने मे दिन ही कितने रह गए है !

जगन्नाथ : वैसे मुनीम जी है तो चतुर। चौबीस दिनो मे तो ये आपकी सम्पूर्ण मिलो का हिसाब तैयार कर सकते है।

मुनीम (मुस्कराकर) इसमे क्या बडी बात है। सात दिनो मे तो शुकदेवजी ने भागवत सुनाकर परीक्षित को स्वर्ग मे भेज दिया था, फिर अपने हाथ मे तो अभी चौबीस दिन है।

[सभी हसते है। इसी समय माधो नमकीन, मिठाई व चाय की ट्रे आदि ला-लाकर रख देता है। फिर पानी की गिलासे लाने के लिए घर मे चला जाता है।]

सेठ : (मिठाई आदि की ओर देखकर) हा तो फिर क्या देर-दार है ? यज्ञ आरम्भ करे, होम की सारी सामग्री तैयार है।

मुनीम : आप ही प्रारम्भ कीजिये।

सेठ : नही। यज्ञ का आरम्भ तो ब्राह्मण से ही ठीक रहता है। (कपिलदेव से) करिये पण्डित जी उद्घाटन, ब्राह्मण का मुख तो अग्नि-तुल्य होता है।

कपिलदेव : सेठजी, आप भूल कर रहे है। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की भेद-कल्पना मिट्टी मे मिल रही है। यह हमारी दुकानदारी वर्षो तक ही नही सहस्राब्दियो तक चलती रही है।

मुनीम · (व्यग्य से) और आज आप वास्तविकता को पहचान चुके हैं।

कपिलदेव : और नही तो क्या ? हम सभी भारतीय है एक ही मिट्टी से बने हुए, एक ही धरती पर खेले हुए तथा एक से ही पोषित है।

सेठ (आश्चर्य से) वाह पण्डितजी। आप तो पूरे राष्ट्रवादी बन गए है।

मुनीम · और जैसे दूसरो को तो दकियानूसी ही समझ रहे है।

सेठ · इन्हे क्या पता कि मेरे क्या विचार है ? मेरी मजाक को ये गभीर समझ बैठे। (कपिलदेव से) आप जानते है कि मै जब भी किसी मन्त्री महोदय से अथवा उच्च अधिकारी से मिलने जाता हू तो शुद्ध खद्दर के कपडे पहन कर जाता हूं।

कपिलदेव · और नही तो………

जगन्नाथ (बीच मे बोल उठता है) आप सेठजी इन बातो मे क्यो उलझ रहे है ? पहले कुछ खा-पीकर बहस करना ठीक रहता है क्योकि भूखा व्यक्ति क्या पाप नही करता ?

कपिलदेव · (जगन्नाथ को झिडकते हुए) तुम क्या सबको अपने समान ही समझ रहे हो ?

सेठ कपिलदेव जी ! आज आपको यह क्या हो गया है ? कुछ ही वर्षों मे ऐसा परिवर्तन । आप तो क्रान्तिकारी बन गये है ।

कपिलदेव (भावावेश मे) क्रान्तिकारी ? (कुछ रुककर) हा, क्रान्तिकारी बन गया हू । आज भारत के प्रत्येक नागरिक को क्रातिकारी बनना है किन्तु वह क्रान्ति राष्ट्रीय भावनाओ मे ओतप्रोत होगी तथा रक्तहीन होगी ।

जगन्नाथ तो वह क्रान्ति ही क्या ?

कपिलदेव भूल रहे है आप क्रान्ति का आधुनिक अर्थ । रक्तिम व हसायुक्त क्रान्ति का युग बीत चुका है । यह क्राति विचारो की क्राति होगी । साथ ही साथ हमे नैतिकता का पाठ पढना होगा, राष्ट्र को सर्वोपरि मानना होगा ।

सेठ इसमे क्या नई बात है ? राष्ट्र से बढकर और होता ही क्या है ?

जगन्नाथ सेठ साहब को आप क्या उपदेश दे रहे है । आपने तो जनहित को ध्यान मे रखकर पहले से ही कॉलेज-चिकित्सालय खोल रखे है ।

कपिलदेव हा तुम ठीक कहते हो । कालेज खोला चुनाव जीतने के लिये, चिकित्सालय खोला कर (टैक्स) बचाने के लिये ।

सेठ . (सकपका कर, दिखावटी हसी हसकर) तो जाने दीजिये ऐसा रूखा वाद-विवाद । नीति कहती है कि मित्रो से वाद-विवाद नही करना चाहिए ।

जगन्नाथ . ठीक फरमा रहे हैं सेठ साहब ।

सेठ : (बात बदल कर) अरे ! चाय ठडी हो रही है । आज सुबह किसका मुंह देखा था कि सामने रखी हुई मिठाई भी

तरस रही है।

जगन्नाथ · तो अब शीघ्रता करे।

[इतने मे घबडाये हुए-से माधो का प्रवेश]

माधो · (प्रवेश करके) बाबू साहब, बहूजी दीवानखाने मे आकर आपसे कुछ कहना चाहती हैं।

सेठ · (क्रोध से) क्या कहा ?

माधो · (घिघियाते हुए) मैंने तो...... मैंने तो नाही कर दी पर

सेठ : (भाव बदल कर) देखा कपिलदेवजी । यह आज का युग है, स्त्री-शिक्षा का प्रभाव है।

जगन्नाथ : (हा मे हा मिलाते हुए) घोर कलियुग आ गया है।

सेठ : राम, राम । बहू श्वसुर से बात करे। पहले की बहुए घर के ही नही मोहल्ले तक के बडे-बूढो का पर्दा करती थी।

जगन्नाथ · आपने तो सुरेश को पढी-लिखी लडकी से विवाह करने के लिये नाही की, उसे समझाया पर माना नही।

सेठ : और विवाह भी तो ढग से नही किया गया।

कपिलदेव (गभीरता से) सेठजी, आप भूल कर रहे हैं। आज स्त्री को कैदी की तरह चहारदीवारी मे बन्द करके नही रखा जा सकता। श्वसुर से निवेदन करने मे इतनी हायतोबा मचाने की कोई आवश्यकता दिखाई नही देती।

सेठ · (आश्चर्य से) क्या कहा ?

कपिलदेव · सोचकर कहा है कि श्वसुर बहू के लिये पिता के समान होता है।

जगन्नाथ : पर आज तो स्त्रिया घर मे रहना ही नही चाहती। वे भी राजनीति मे भाग लेना चाहती है।

कपिलदेव · यह तो प्रगति का लक्षण है। आज उन्हे सामाजिक, राज-नैतिक व आर्थिक विकास मे सहयोग देना है, जिसके लिये शिक्षा के प्रसार की आव[illegible]ता है। पढी-लिखी स्त्रिया

गृहस्थी को स्वर्ग-तुल्य बना सकती है ।

सेठ आप तो कोरा आदर्श छाटते है ।

कपिलदेव . और आप वास्तविकता से कोसो दूर हैं ।

सेठ नही । मैने तो इसी माह पत्रिका मे एक पढी-लिखी लडकी के ज्ञान का नमूना पढा है ।

जगन्नाथ · फिर इन्हे भी सुनाइये ।

सेठ · बात यह है कि पति के कथनानुसार पत्नी आलू की सब्जी बनाने लगी पर पति के दफ्तर से आने तक पुस्तक को टटोलती रही । पति के पूछने पर कहा कि ये बडे-बडे ऑथर दूसरो की कठिनाइयो को क्या समझें ? बस लिख दिया, आलू को पहले धोओ पर यह नही लिखा कि किससे धोवे—पानी से, दूध से, पेट्रोल से या केरोसीन से ?

[इस पर सभी ठहाका मार कर हंसते है । इतने मे वर्षा प्रवेश करती है । उसकी बगल मे कुछ दबा हुआ दिखाई देता है ।]

वर्षा . (प्रवेश करके, नतमस्तक खडी होकर) पिताजी, यद्यपि मुझे आपके सामने आने का दु साहस नही करना चाहिये था परन्तु अभी-अभी रेडियो से समाचार सुनकर कर्त्तव्य ने मुझे झकझोर दिया है कि मैं युग की आवाज को सुनू व पहिचानू ।

सेठ : (क्रोध से) तुम कहना क्या चाहती हो ? व्यर्थ की बकवास मत करो । क्या सुना रेडियो मे ?

वर्षा : यही सुना कि हमारे पडौसी देश ने हमारी सीमा पर आक्रमण कर दिया है, देश पर विपत्ति के बादल मडरा रहे है । फिर आप जानते ही हैं कि हम सीमा-प्रान्त पर है ।

सेठ . (बीच मे बोल उठता है) यह तो सेना का काम है । तुम्हे-हमे चिन्ता की क्या आवश्यकता है ?

वर्षा : (आवेश मे) सेना को और सरकार को ? क्या देश केवल उन्ही का है ? नही, आप नही जानते कि प्रत्येक देशवासी का कर्त्तव्य हो गया है कि इस महान् यज्ञ मे अपने आपकी आहुति दे दे। हम सभी को इसमे सहयोग देना है।

सेठ : क्या सहयोग ? कैसा सहयोग ?

वर्षा · यही कि हमारे जवान सीमा पर शत्रुओ से लडेगे और हमे लड़ना होगा सीमा मे फैल रहे अनैतिक व राष्ट्र-द्रोही तत्वो से। हमे आर्थिक परिस्थितियो को सतुलित रखना होगा।

सेठ (क्रुद्ध होकर) तो तुम चाहती क्या हो ? यह लेक्चर क्यो झाड रही हो ?

वर्षा · मैं तो निवेदन करना चाहती हू कि हम सभी इस पावन-यज्ञ मे हव्य दे। शस्त्रास्त्रो को मागने के लिये व अन्य हित-कारी कार्यों के लिये सोना दे।

सेठ · (जोर से) सोना !......कहा है सोना ? क्या पागल हो गई हो ?

वर्षा : क्या ? सोना नही है ? सोने की सैकडो सिलिया जो तहखाने के नीचे गडवा रखी हैं—वे किस काम आवेगी ? उस गडे हुए सोने व मिट्टी मे क्या अन्तर है ?

सेठ : (आवेग मे) यह पागल हो गई है......हडका गई है...... इसे......

वर्षा : यह तो युग बतलावेगा कि वस्तुस्थिति क्या है ? सोने का महत्त्व देश से बढकर नही होता।

सेठ : पर सोने से ही तो पूछ होती है। विष्णु को भी लक्ष्मी के सामने अपमानित होना पडा था।

वर्षा : किन्तु रावण को सोने के उन्माद (सोने की लका के उन्माद) के कारण ही निर्मूल नष्ट होना पड़ा था। विभी-

षण ने सोने की लका का त्याग किया तो महान् बना। परीक्षित को सोने के मद के कारण ही मरना पडा।

सेठ (आवेश मे आकर) तुम चली जाओ यहा से। मैं कहता हू चली जाओ, यह तुम्हारा उपदेश.........

वर्षा . (बीच मे बोलती हुई) तो आप सोना नही देगे ? पर यह भी याद रखें कि सोने को सुरक्षित रखने के पहले सीमा को सुरक्षित रखना अनिवार्य है।

सेठ : (माधो से) निकालो इसे—अभी बाहर करो— घर मे ले जाओ—यह पागल हो गई है।

वर्षा . (तमतमा कर) ठीक है, तो मै यह चली। (बगल मे से गठरी निकाल कर दिखलाती हुई) जाती हू—रक्षा-कोष मे अपने आभूषण—अपने स्त्री-धन को जमा कराने के लिये।

सेठ · (उठते हुए) पकडो इसे—पकडो—यह पागल है— चोर है।

[देखते-देखते वह शीघ्रता से प्रस्थान कर जाती है। सब किंकर्त्तव्यविमूढ से होकर एक दूसरे की ओर ताकने लगते हैं। कुछ ही क्षणो मे एक विशाल जन-समुदाय उमडा हुआ-सा हवेली के पास से गुजरने लगता है। उसमे से दो प्रतिनिधि हवेली मे प्रवेश करते है, शेष जन-समूह रुककर 'जय जवान, जय किसान', 'भारत-माता की जय', 'हमारे वीर प्रधान मन्त्री की जय', 'प्रधान मन्त्री जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारो से आकाश को गुञ्जित कर देता है।]

सेठ · (बाहर झाककर देखता है, इतने मे दो नेता चतुर्भुज व रामभुज को प्रवेश करते देखकर) आइये, कैसे कष्ट किया ? ......बैठिये, क्या आज्ञा है ? आपके लिये चाय मगाई जाय या कॉफी ?

चतुर्भुज · नही, अभी चाय-वाय पीने का समय नही। (कुछ गभीर होकर) सेठजी, आप जानते ही है कि आज हमारे ऊपर घोर सकट छाया हुआ है। देश के नेताओ ने सोना देने के लिये जनता का आह्वान किया है।

रामभुज . सेठ साहब, देश को बाह्य आक्रमणो से सुरक्षित रखने तथा अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करने एव आत्मनिर्भर बनने के लिए विकास कार्यों और सुरक्षा-प्रयत्नो को एक साथ जारी रखना आवश्यक है। इसके लिये हमे विदेशी-मुद्रा की अत्यधिक आवश्यकता है।

सेठ तो यह तो हमारे प्रतिनिधियो के विचारने की बात है। हमसे जैसा बने सहयोग ले लीजिये।

चतुर्भुज इसी आशा व विश्वास से तो आये ही है। आप सबसे अधिक सपत्तिशाली व उदार है। आज देश को सोने की जरूरत है।

सेठ हा, मैं भी मानता हू। (कुछ रुक कर) इसीलिए मैंने मेरे बेटे की बहू वर्षा के साथ कुछ आभूषण रक्षा-कोष मे भेजे है।

चतुर्भुज : सो तो ठीक है। किन्तु इतने से काम थोडे ही चलेगा। यदि आप रक्षा-कोष मे अधिक सोना नही दे सकते तो स्वर्ण-बाड ही खरीद लीजिये।

सेठ · स्वर्ण-बाड ! कैसे स्वर्ण-बाड ?

चतुर्भुज सुनिये हमारे प्रधान मत्री जी ने जन-हित व राष्ट्र-हित दोनो को ध्यान मे रख कर स्वर्ण-बाड-योजना की घोषणा की है।

सेठ योजनाए व घोषणाए तो होती ही रहती है।

चतुर्भुज . आप ऐसा क्यो सोचते है ? यह योजना ऐसी-वैसी नही है।

सेठ . किन्तु आप बतलाइये कि साढ़े-बासठ रुपए प्रति तोले के

भाव से सोना कौन देना चाहेगा ?

चतुर्भुज · आप भूल कर रहे हैं। आप इस सकट के समय को रुपयो से आक रहे है ?

रामभुज फिर हाल ही मे जो योजना घोषित हुई है उसमे तो आप वाण्ड खरीद सकते है । वाण्ड खरीदने वालो को अनेकानेक सुविधाये भी प्रदान की गई है।

सेठ . इस वहाने सरकार पू जीपतियो को फसाना चाहती है।

चतुर्भुज सेठ साहब, आप कैसी बाते कर रहे है। देखिए लोगो मे जो गलतफहमी फैली हुई है उसे ही तो दूर करना है। सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बाड खरीदने के लिए दिया गया स्वर्ण चाहे घोषित हो या अघोषित उसकी जाच पडताल नही की जावेगी।

रामभुज · और भी सुनिए—इस सोने पर सपत्ति-कर नही लगेगा। पचास किलोग्राम तक के सोने के (स्वर्ण) बाडो पर मृत्यु-कर भी नही लगेगा। इसलिए यह अच्छा इन्वेस्टमेण्ट है।

सेठ . यह तो सुन लिया, परन्तु यह इन्वेस्टमेण्ट नही है।

चतुर्भुज क्यो नही है ? प्रति दस ग्राम सोने पर दो रुपए प्रतिशत वार्षिक सूद दिया जावेगा। इसके अतिरिक्त तीन रुपए प्रति दस ग्राम सोने के गहनो पर उसकी घडाई के दिए जावेंगे।

रामभुज इस प्रकार प्रति दस ग्राम पर कुल पाच रुपए प्रतिशत वार्षिक पड जाता है। इसमे व्याज की रकम कर-मुक्त होगी।

कपिलदेव और सबसे बडा इन्वेस्टमेण्ट तो राष्ट्रीय हित मे है ही।

सेठ तव तो यह योजना ठीक है। (वनावटी हसी हमकर) पर हमारे पास इतना सोना कहा ?

चतुर्भुज : (आश्चर्य से) आपके मु ह यह बात शोभा नही देती।

(कुछ सोचकर) एक लाभ और भी है कि पन्द्रह वर्षों के बाद जो शुद्ध सोना वापस लौटाया जायगा उसके गहने आदि बनवाते समय चौदह कैरट की पाबन्दी नही होगी।

रामभुज (कुछ हसकर) और सबसे बडा लाभ यह भी होगा कि आप चोर व डाकुओ के भय से मुक्त हो जावेगे। आपको बैंक के लॉकरो का किराया भी नही देना पडेगा। इसलिये शीघ्रता कीजिए। (थैले मे से लिस्ट निकालते हुए) तो आपके नाम से कितने लाख दर्ज करवाने हैं ?

सेठ . (कुछ चिन्तित-सा होकर) देखिए अभी तो मैं कुछ नही कर सकता। क्षमा कीजिए.........(कुछ रुक कर) और पन्द्रह सालो मे क्या होगा—कौन जाने ?

चतुर्भुज · (गभीरता से) देखिये सेठ साहब, आज टालने का समय नही है। इस सकट का सामना हम सबको मिलकर करना है। मातृभूमि की रक्षा के लिए हमे सोना तो क्या तन-मन-धन सहर्ष बलिदान करने मे भी नही हिचकिचाना चाहिए।

रामभुज (गभीर होकर) सेठ साहब ! सोने और सकट मे आप किसको चुनते है ? सोना दबाकर रक्खेगे तो सकट झेलना पडेगा, सकट मिटाना चाहते है तो सोना देना होगा। आखे बन्द हो जाने पर यह सब कुछ यही रक्खा रह जावेगा। शीघ्रता कीजिये हमे और भी ......

[इतने मे सायरन सुनाई देता है। सभी चौंक जाते है। जन-समुदाय खाइयो की ओर भागता है।]

सेठ (भौचक्का-सा होकर) है.. है.........यह क्या ?

चतुर्भुज (आत्मविश्वास से) घबराइए नही सेठ साहब, हम सकट का सामना करने को तैयार है। आज्ञा दीजिए।

सेठ (अपनी करधनी से चाबिया खोलकर चतुर्भुज के हाथ

मे देते हुए ।) लीजिए नेताजी ये चाबियां··············· जितना सोना चाहे लीजिए················ मिट्टी और सोना समान है······· ···सोना··· देश का मूल्य सोने से करोड गुना अधिक है । लीजिए······देश के लिए····· राष्ट्र-रक्षा के लिए······· संकट का सामना करने के लिए · रक्षा-कोप के लिए······। लीजिए·········

[सभी प्रसन्न होते है ।]

[पटाक्षेप]

• •

अजी सुना आपने

• •

पात्र

माथुर	राजकीय कॉलेज का अस्थायी प्राध्यापक
चिन्तामणि, कुन्तल, पुरी, शर्मा, अग्निहोत्री, खण्डेलवाल, और रामप्रसाद	उसी कॉलेज के स्थायी प्राध्यापक
पोस्टमेन	

[**स्थान** · राजकीय कॉलिज के प्रोफेसर श्री चिन्तामणि का मकान जो शहर से कुछ दूर, आधुनिक ढग से बना हुआ है। उसके चारो ओर फुलवारी लगी हुई है। गर्मी के कारण पत्तिया झुलसने लगी है। कुछ झडने भी लगी हैं पर उचित देख रेख के कारण फुलवारी के सौन्दर्य मे कमी नही आई है। मकान को बगला या कोठी विशेषण से सबोधित किया जाता है। दरवाजे मे प्रवेश करते ही सामने ड्राइंग-रूम बना हुआ है जो आधुनिक साज-सज्जा से सज्जित है। उसके फर्श पर कार्पेट बिछी हुई है, बीच मे मेजपोश से ढकी हुई एक मेज रक्खी हुई है जिसके आमने-सामने कुर्सिया रक्खी हुई हैं। मेज के दाहिनी ओर एक आलमारी मे पुस्तकें करीने से रक्खी हुई हैं। श्री चिन्तामणि लिखने मे व्यस्त दिखाई देते है। इसी समय उनके सहयोगी श्री कुन्तल व श्री माथुर प्रवेश करते हैं।]

कुन्तल : (प्रवेश करके) नमस्ते जी, क्या हो रहा है ?

चिन्तामणि . नमस्ते, आइये बिराजिये।

माथुर · (हसकर) और हमारा भी ध्यान रखिये।

चिन्तामणि : (मुस्करा कर) भई अपना-अपना ध्यान स्वय को रखना है।

माथुर · यह तो ठीक है पर छुट्टी के दिन क्या लिखा-पढी हो रही है ?

कुन्तल क्लास-नोट्स तैयार कर रहे होगे। आज की शिक्षा-प्रणाली ही ऐसी है। हमे तो ट्यूब-वेल से सिचाई करनी है।

माथुर : कैसे ?

कुन्तल . जिस प्रकार पाइप के द्वारा कुए से पानी निकाल कर नाली के द्वारा वाग की सिचाई की जाती है, उसी प्रकार हम भी पुस्तको के ज्ञान को अपने मस्तिष्क मे सकलित करके छात्रो तक पहुँचा देते है—वाग की सिंचाई कर देते हैं।

चिन्तामणि . और इससे वढकर यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार कुए का पानी टकी मे एकत्र किया जाकर पाइप के द्वारा घडो मे भरा जाता है फिर घडो से वाल्टी मे भर कर स्नानादि के वाद नाली के द्वारा कही चला जाता है वैसे ही आज हम लोग पुस्तको रूपी कुए से अपने टकी रूपी मस्तिष्क मे टापिक्स को सग्रहीत करके कक्षा मे जाते है और फिर छात्र-रूपी घडो मे उस ज्ञान-रूपी पानी को भरने का प्रयत्न करते हैं।

माथुर . (हस कर) या यो कहिए कि ज्ञान-रूपी पानी को छात्र-रूपी घडो मे भर दिया जाता है।

कुन्तल . देखिये माथुर साहव, आप वीच मे मत वोलिये, सारा मजा किरकिरा हो जाता है। पूरी वात सुनने दीजिए।

चिन्तामणि हा, तो फिर वह ज्ञान-रूपी पानी परीक्षा के समय उत्तर-पुस्तिका-रूपी वाल्टी मे पहुँच जाता है और फिर उसे सिंचाई के योग्य या अयोग्य घोषित करने के लिये परीक्षक-रूपी माली उसका परीक्षण करता है और इसकी रिपोर्ट वह आवश्यक कार्यवाही हेतु विश्वविद्यालय-रूपी अनुसधानशाला मे भेज देता है।

माथुर : वाह चिन्तामणि जी, आप तो चिन्तन करने मे दक्ष है।

कुन्तल : और नाम भी तो चिन्तामणि है।

[सब हसते हैं।]

माथुर : क्षमा कीजिएगा, हमने आपके कार्य मे बाधा पहुँचाई होगी। क्या लिख रहे थे ?

चिन्तामणि कोई विशेष बात नही थी, एक छोटा-सा निबन्ध लिख रहा था।

कुन्तल : किस कक्षा के लिए ?

चिन्तामणि . नही, कक्षा के लिए नही, पत्रिका मे भेजने के लिये।

माथुर · किसी विशेषाक मे भेजना है ?

चिन्तामणि : हा, विद्यार्थी-विशेषाक के लिए भेजना है। सम्पादक ने शीघ्र ही कोई छोटा-सा निबन्ध भेजने के लिए आग्रहपूर्वक लिखा है।

कुन्तल . किस विषय पर लिख रहे हैं ?

चिन्तामणि विषय तो वही घिसा-पिटा है—छात्र और अनुशासन। आप जानते ही है कि आज के छात्रो पर अनुशासनहीनता का लाछन लगाया जाता है।

माथुर क्या बताऊ आज तो हवा ही ऐसी बह रही है।

चिन्तामणि . और इसके लिए हम भी उत्तरदायी है—उनके अभिभावक भी है।

कुन्तल (आश्चर्य से) भला इसमे हमारा क्या उत्तरदायित्व ? हमारा काम तो उन्हे पढाना है, पाठ्य-क्रम के अनुसार और परीक्षा की दृष्टि से समझाना है।

माथुर : कुन्तल साहब का कथन सत्य है और देखिये हमे मिलता ही क्या है ? इतने पैसो मे तो ऐसा ही काम होगा।

चिन्तामणि : यही तो हमारी भूल है। हम प्रत्येक बात को पैसो से आकते हैं। माफ कीजिये हम शिक्षा का अर्थ ही नही समझते।

कुन्तल : और आपसे सीखेगे। आप ही फरमा दीजिए।

चिन्तामणि 'शिक्षा' का अर्थ है कि हम छात्र को शारीरिक तथा मानसिक विकास करने की सीख दे। उसके चरित्र-निर्माण के लिए मार्गदर्शक बने तथा उसे एक सुयोग्य नागरिक बनावे।

माथुर : पर हम भी तो यही समझते है।

चिन्तामणि : समझते कहा है ? आज इसके विपरीत हो रहा है। कॉलेज से निकलने वाला विद्यार्थी कुछ प्राप्त करके नही अपितु कुछ खोकर निकलता है—ऐसी आम धारणा है।

माथुर . इसका कारण तो उनके कर्म ही है। उनके अभिभावक ध्यान क्यो नही रखते ?

चिन्तामणि : आप भी कैसी बाते करते है। शिक्षा देने का उत्तरदायित्व हमारा है।

माथुर : ये बाते तो जाने दीजिए (कुछ स्मरण-सा करके) हा, तो आपने अपने निबन्ध मे अब तक कितने कारण गिनाए हैं, वे ही बतला दीजिए।

चिन्तामणि : (सबधित अश पढते हुए) मेरे मतानुसार इस अनुशासनहीनता का मुख्य कारण शिक्षक है। वे छात्रो को अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बनाते है।

कुन्तल : (आश्चर्य से) यह आपने क्या लिख दिया है ? क्या दूसरे लोग छात्रों को माध्यम नही बनाते, अपना उल्लू सीधा नही करते ?

चिन्तामणि : करते है। इसके बारे मे भी मैंने लिखा है।

माथुर : हमारा क्या स्वार्थ सिद्ध होता है छात्रो से ?

चिन्तामणि : होता क्यो नही ? आज कॉलेज के प्राध्यापक आपस मे लडते है और अपना वैर निकालने के लिये छात्रो का प्रयोग करते है। किसी के विरुद्ध शिकायते करवाते है, किसी के विरुद्ध परचे निकलवाते है और किसी की कक्षा मे शोर

मचवाते है ।

माथुर · (सकपकाकर) पर यह तो सब जगह होता है ।

चिन्तामणि : यही तो मै कहना चाहता हू ।

कुन्तल . और दूसरा कारण क्या लिखा है आपने ?

चिन्तामणि : दूसरा कारण है दृष्टिकोण की भिन्नता । देखिए साप को देखकर मनुष्य एक ओर भागता है और मनुष्य को देखकर साप दूसरी ओर । साप देखता है कि आदमी मुझे मार नही दे और आदमी देखता है कि साप मुझे काट नही ले । अत दोनो विपरीत दिशाओ मे भागते हैं ।

माथुर : तो इसमे नई बात क्या है ? दोनो के लक्ष्य भी भिन्न हैं ।

चिन्तामणि : नही । दोनो का दृष्टिकोण है अपना बचाव करना । दोनो का लक्ष्य एक ही है परन्तु दृष्टिकोण की भिन्नता है ।

माथुर पर इसका छात्रो की अनुशासनहीनता से क्या सम्बन्ध ?

चिन्तामणि : है कैसे नही ? हमारी उदासीनता इसका कारण है ।

माथुर : और छात्रो की उदासीनता नही है ?

चिन्तामणि · नही । छात्र चाहते है कि हम सब उत्तीर्ण हो और शिक्षक चाहता है कि मेरी कक्षा का परीक्षा-परिणाम शत-प्रतिशत रहे तो फिर जब शिक्षक और शिक्षार्थियो का दृष्टिकोण एक होता है तो उन्हे छात्रो से उदासीन नही रहना चाहिये ।

माथुर · आप तो आदर्श की बात करते हैं, व्यावहारिक दृष्टि से जरा सोचा कीजिए कि हमे वेतन ही कितना मिलता है । इतने पैसो मे तो इतना ही होगा ।

कुन्तल (मुस्करा कर) ठीक है । जी-आई-आर-एल का उच्चारण 'गिर्ल' ही होगा और अधिक कहा जाएगा तो 'जिर्ल' पढाया जाएगा ।

माथुर . (बीच मे बोल कर) और 'कस्टम्स डिपार्टमेण्ट' की

जगह बोर्ड पर 'क-स-ट-म-स डि-पा-र-ट-मे-न-ट' लिखा जायेगा। क्यो ?

[इस पर सभी हसते हैं।]

चिन्तामणि : (गभीर होकर) क्या यह हमारी प्रशसा है ?

माथुर : आप इतने गभीर क्यो है ?

चिन्तामणि : नही, ऐसी बात नही। मैं तो कहता हू कि आज महत्ता का मापदण्ड बदल गया है इसलिये सभी गडबड़ हो रही है। पैसो का महत्ता से ऐसा सम्बन्ध जुड़ गया है कि आज कम से कम त्याग करने वाला तथा अधिक से अधिक समाज से—राज्य से—ग्रहण करने वाला व्यक्ति महान् होता है।

कुन्तल : तर्क तो आप ठीक कर लेते है।

चिन्तामणि : इसमे तर्क की क्या बात है ? तुम ही देख लो कि आजकल वडे से वडा डाक्टर, वकील, शिक्षक, अफसर या वैद्य उसी व्यक्ति को समझा जाता है जो कम समय काम करे और उसके बदले मे अधिक से अधिक पैसे ले।

माथुर : इसके बिना काम कैसे चल सकता है ? युग के अनुकूल जीवन-स्तर भी तो रखना पडता है।

चिन्तामणि : और गजेटेड अफसरी का भार भी तो दिमाग मे रहता है।

कुन्तल : आज क्या बात है ? क्या किसी से लडकर बैठे है ?

चिन्तामणि : और आप भी मेरी बात को हसी मे उडा दते हैं। क्या आप मेरी इस बात से सहमत नही होगे कि आज हम छात्रो को पढाने की अपेक्षा ऊपरी बातो मे अधिक समय खर्च करते हैं।

[पोस्टमेन तार लेकर प्रवेश करता है।]

पोस्टमेन : श्री बी० सी० माथुर यहा बतलाये गये हैं, यहा हैं क्या ?

माथुर : हा—हा, क्या मेरे नाम का टेलीग्राम है ?

पोस्टमेन : जी हा (तार के हस्ताक्षर करवा कर चला जाता है।)

माथुर (टेलीग्राम को पढकर) है···हैं—यह क्या ?

[सब उनकी ओर देखते हैं ।]

कुन्तल : (तार को लेकर पढते हुए)—'योर सर्विसेज टर्मीनेटेड हेड-ओवर चार्ज—डायरेक्टर ।'

चिन्तामणि (सुन कर) यह तो बहुत बुरा हुआ ।

कुन्तल देखा आपने, जब हमारी नौकरी का ही कुछ पता नही कि मार्च मे टर्मिनेट हो या अप्रेल मे या कभी भी तो हम छात्रो को मन से कैसे पढा सकते है इसलिये आप अपने निबन्ध मे एक कारण यह भी लिखे ।

माथुर (सिसकिया भरते हुए तार को एक ओर फेक देता है) तो अब मेरा क्या हाल होगा ?

[अन्य प्रोफेसर सर्व श्री पुरी, शर्मा, अग्निहोत्री व खण्डेलवाल प्रवेश करते है ।]

शर्मा · (अभिवादन करने के उपरान्त) आप अभी तक गप्प-शप्प लगा रहे है सिनेमा नही चल रहे है क्या ? कल क्या तय हुआ था ?

खण्डेलवाल . कल के निश्चय के अनुसार तो आपको अभी चिन्तामणिजी के साथ तैयार रहना चाहिये था ।

पुरी · (माथुर को देखकर) अरे आप भी चलिये ।

माथुर (अत्यन्त व्यग्र होकर) हम क्या चले ?

[सभी उनकी ओर देखते है ।]

पुरी क्यो क्या बात है ? आप इस तरह उदासीन होकर रुआसे क्यो हो रहे है ?

कुन्तल (गभीर होकर) अस्थाई प्राध्यापको की यही हालत हो सकती है ।

पुरी : क्यो क्या बात है ?

चिन्तामणि (तार देते हुए) देखिये ।

[सभी आगन्तुक तार को पढकर उदास हो जाते हैं ।]

शर्मा : (आश्वासन देते हुए) क्या माथुर साहब आप भी बच्चो की तरह रो रहे है, हम आपके लिये प्रयत्न करेंगे ।

अग्निहोत्री : (शर्मा से) यदि आप चाहे तो अपने चाचा से कह कर कुछ सहायता कर सकते है ।

शर्मा . वे अभी शिक्षा-विभाग मे तो नही है किन्तु विधि-विभाग मे है । खैर कुछ न कुछ तो हो ही जायेगा चिन्ता की आवश्यकता नही ।

खण्डेलवाल : (घडी देखकर) तो अब हम चलते है । (सभी से) चलो भाई तीन बजने वाले है । शो शुरू होने वाला है । रामदहिनजी भी इन्तजार कर रहे होगे ।

पुरी : (माथुर से) आप प्रिंसिपल साहब से कनफर्म कर लीजिये । उनके पास भी सूचना आई होगी या इस तार की नकल आई होगी ।

चिन्तामणि · भई मै भी नही चलूगा । कल ही मैने नाही कर दी थी । आपने जो कष्ट किया उसके लिये धन्यवाद ।

[चिन्तामणि व माथुर को छोड कर सभी चले जाते है ।]

माथुर : (चलने का उपक्रम करते हुए) मैं जाकर प्रिंसिपल साहब से मिल आता हू ।

चिन्तामणि : हा आज तो साहब घर पर ही होगे, रविवार है ।

माथुर : सिनेमा तो नही गये होगे ?

चिन्तामणि नही, परीक्षा-कार्य मे व्यस्त है । इन दिनो मे कही उन्हे फुर्सत मिलती है ? (कुछ सोच कर) यह तार कल का दिया हुआ होगा ?

माथुर : कल का हो या आज सुबह दिया गया होगा । (चलने लगता है ।)

[श्री रामप्रसाद प्रोफेसर प्रवेश करते है । श्री माथुर मुख्य

द्वार तक पहुच जाते है ।]

रामप्रसाद कहिये माथुर साहब, इस गर्मी मे वापस कहा जा रहे है ?

माथुर एक ग्रावश्यक कार्य से प्रिंसिपल साहब से मिलकर ग्राता हू ।

रामप्रसाद क्या कोई विशेष कार्य है ? (उसके चेहरे की ग्रोर देख कर) ग्ररे इतने ग्रस्त-व्यस्त क्यो दिखाई दे रहे हो ?

माथुर (तार देते हुए) देखिये ।

रामप्रसाद (तार को पढ कर हसते हुए) यह तो ठीक है ।

माथुर (चिढ कर) ठीक है ? क्या आप मुझे चिढाने के लिये आये हैं, मेरे घावो पर नमक छिडकने के लिये ग्राये है ?

रामप्रसाद ग्रौर यह मरहम का काम दे तब ?

माथुर · व्यर्थ की बकवास अभी मत कीजिये । आप ग्रन्दर जाकर चिन्तामणि के पास ठहरिए । मैं साहब से मिलकर अभी ग्राता हू ।

रामप्रसाद पर ग्राप जा क्यो रहे है ?

माथुर (क्रुद्ध होकर) मजाक रहने दीजिये ।

रामप्रसाद मजाक ? तो क्या अपनी मूर्खता का प्रकाशन करने के लिये जा रहे है ?

माथुर · (अनसुनी करके चलते हुए) घायल की गत घायल जाने··· (जाने लगता है)

रामप्रसाद . (हाथ पकड कर) ग्रजी सुना आपने—तार मे क्या लिखा है ?

माथुर (रोष से) हा, सुन लिया, पढ लिया व समझ लिया, मैं बेवकूफ नही हू ।

रामप्रसाद (हंसते हुए) और नही तो क्या है? क्या खाक पट लिया आपने? सर्व श्री पुरी, कुन्तल, शर्मा, खण्डेलवाल व अग्निहोत्री की योजना सफल हो गई। उनके द्वारा बनाया हुआ फासी का फन्दा आपके गले मे फिट आ गया। (तार दिखाते हुए) देखिये, इसमे कही डाकखाने की मोहर है? आज तो एक अप्रेल है—एक अप्रेल जनाब! (फिर ठहाका मारकर हसता है।)

[पटाक्षेप]

त्याग की बलिवेदी पर

पात्र

राजेन्द्र प्रसाद	अवकाश-प्राप्त राज्य-कर्मचारी
रमेशचन्द्र	विकास अधिकारी, राजेन्द्र प्रमाद का पुत्र
वीरचन्द्र व महेन्द्र	राजेन्द्र प्रसाद के दूर के सम्बन्धी
अन्य व्यक्ति	वधाई देने आये हुए

[**स्थान** . प० राजेन्द्र प्रसाद का मकान। आज उनके एक-मात्र पुत्र रमेशचन्द्र के लडका हुआ है इसलिए बधाई देने के लिये आने वालो का ताता लगा हुआ है। वे आगन्तुको को खुशी-खुशी रुपया-नारियल दे रहे है। विशेष बन्धुजन व मित्र उनके निजी कमरे मे विनोद-वार्त्तालाप मे रत है। वे रमेशचन्द्र के आने की प्रतीक्षा मे बैठे हुए हैं। दिन के दस बज चुके है। प० राजेन्द्र प्रसाद हाथ मे पान-सुपारी से युक्त थाली लेकर कमरे मे प्रवेश करते हैं। फर्श पर थाली रखकर वे बैठ जाते हैं।]

राजेन्द्र प्रसाद (प्रसन्न मुद्रा से, कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए) आप लोगो ने बडी कृपा की।

वीरचन्द्र इसमे कृपा की क्या बात है, रमेश के लडका हुआ है इससे बढकर खुशी और क्या हो सकती है ?

राजेन्द्र प्रसाद : यह तो आप सब बन्धुजनो की सद्भावना का ही तो फल है। अन्यथा मेरा यह सौभाग्य कहा ?

धीरचन्द्र (हसते हुए) तो अब क्या देर-दार है। आप तो पहले ही पान-सुपारी ले आये। अभी तक तो ए० बी० सी० आरम्भ ही नही हुई, यह फुल-स्टॉप कसे लगाने।

राजेन्द्र प्रसाद . (हस कर) इसमे कौन-सी बडी बात है। रमेश अभी

तक नही आया, उसकी ही प्रतीक्षा है। उसे महीने मे अठारह दिन दूर पर रहना पडता है।

वीरचन्द्र रमेश तो आता रहेगा, मालिक तो आप हैं।

महेन्द्र रमेश जैसे रत्न आज बहुत कम हैं। अपने कर्त्तव्य का पालन करने मे सदा रत रहता है।

वीरचन्द्र इतना पढा-लिखा होने पर भी अहकार-रहित है, पद का मद तो उसे छू तक नही गया है।

महेन्द्र भई रमेश की तो बात ही जाने दो, इतने उच्च पद पर आसीन होते हुए भी दूसरो के दु ख-दर्द को समझता है।

वीरचन्द्र . पर आजकल के युग मे कुछ कम 'फिट' बैठता है। फैशन की तो बात ही क्या चाय तक नही पीता।

राजेन्द्र प्रसाद . हा, चाय के बारे मे उसका कहना है कि हमे कोरी 'टी' नही पीनी चाहिये, हमे वास्तविक 'टी' को जीवन का अंग बनाना चाहिये।

महेन्द्र क्या मतलब है उसका ?

राजेन्द्र प्रसाद · यह कि हमे टी' (टी-वाई) से युक्त 'मोरेलिटी', 'ओनेस्टी,' 'सिन्सिअरिटी, और पकच्युअेलिटी को अपने जीवन मे उतारना चाहिये अन्यथा आज के फैशन के अनुसार सोलह बू द से युक्त दूध वाली चाय निरर्थक है।

[सब हसते है फिर गभीर हो जाते है।]

महेन्द्र · बात तो सोलह आने ठीक है।

वीरचन्द्र पर चाय के लिये तो सदैव ही द्वन्द्व रहा है। पाणिनी ने भी लिखा है "चार्थे द्वन्द्व"—चाय के लिये द्वन्द्व होता है।

[सभी हसते हैं।]

महेन्द्र : खो इन सारहीन बातो को जाने दीजिए। पहले तो खाने-पीने का प्रोग्राम बनाइये।

राजेन्द्र प्रसाद इसमे क्या बडी बात है ? आप सब बन्धुओ की जैसी राय होगी वैसा ही प्रबन्ध हो जायेगा ।

महेन्द्र (वीरचन्द्र से) तो कहो न फिर क्या इच्छा है ? इसमे सामान्य मतदान से काम नही चलेगा । डिटो-वीटो कुछ न कुछ काम मे लेना पडेगा ।

वीरचन्द्र (मुस्करा कर) सर्दी का मौसम है और आतो को चिकना करना है अत घी का इन्जेक्शन ही दिया जाय ।

महेन्द्र . क्या घी पी लिया जाय ?

वीरचन्द्र नही-नही, मू ग की दाल का हलुआ बनाया जाय जिससे अपने आप घी का इन्जेक्शन लग जायेगा ।

महेन्द्र उपाय तो ठीक निकाला है तुमने । किन्तु यह ध्यान रखना कि ठू स-ठू स कर मत खाना ।

वीरचन्द्र (हस कर) क्या मैं अपने गुरुजी का नाम कलकित करू गा ।

राजेन्द्र प्रसाद . (हस कर) क्यो भई, मुझ से कुछ वैर है क्या ?

महेन्द्र नही, वैर की कोई बात नही । अभ्यास तो करना ही पडेगा । इनके गुरुजी अपने साथी लाल गिरिवर प्रसादजी वकील के घर खाना खा रहे थे तो बडी विचित्र घटना घटी ।

वीरचन्द्र · तो सुनाओ न राजेन्द्र प्रसादजी को जिससे आज बिना कुछ खाये-पिये ही घर लौटना पडे । आपकी बाते सुन कर भला कौन साहस करेगा इस जमाने मे ।

राजेन्द्र प्रसाद क्या आप मुझे इतना कच्चा समझते हैं । मैं भी तो आप मे से ही हू । मन मे क्यो रखते हो, सुना ही दो गुरुजी वाला किस्सा । सभी सज्जन सुन लेंगे ।

महेन्द्र . तो सुनिये । पण्डितजी की मनुहार करने मे लालाजी लगे

हुए थे इतने मे उनकी छोटी मुन्नी तीन-चार बार रोती हुई उनके पास आई और कहने लगी कि बाबूजी मैं भी हलुआ खाऊगी, मै भी हलुआ खाऊगी ।

राजेन्द्र प्रसाद (बीच मे बोलते हुए) बच्चे तो आते ही रहते है। इसमे बतलाने की क्या बात है ।

महेन्द्र आप सुनिये तो सही। आप तो बात का क्रम बिगाड देते हैं ।

राजेन्द्र प्रसाद अच्छा तो सुनाइये ।

महेन्द्र . बात यह थी कि मुन्नी के अधिक तग करने पर लालाजी अन्दर गये और कहा कि मुन्नी को क्यो रुलाते हो ? हलुआ दो न इसे। इस पर उत्तर मिला कि हलुआ तो नही है ।

राजेन्द्र प्रसाद तो इसमे आश्चर्य की क्या बात है, कम बनाया होगा ?

महेन्द्र . कम क्या, बीस व्यक्तियो का खाना बना था, और पाच महारथी खा रहे थे ।

वीरचन्द्र किन्तु अभी आगे तो सुनिये। (महेन्द्र से) सुनाओ यार, गुरुजी की करामात ।

महेन्द्र : हा, तो हलुए के खत्म होने की बात सुनकर लालाजी ने मुन्नी से कहा कि बेटी अभी क्यो रोती है, इनको जाने दे, फिर सब साथ बैठकर रोवेगे ।

[सभी ठहाका मार कर हसते है ।]

राजेन्द्र प्रसाद : (कुछ सोच कर) तो हलुए की तय रही ।

सभी : (एकमत होकर) और क्या ।

राजेन्द्र प्रसाद : परन्तु यह तो कल ही सभव होगा, आज तो एकादशी है।

[सभी एक दूसरे का मु ह ताकने लगते हैं ।]

वीरचन्द्र : (मुस्करा कर) देखा महेन्द्र तुम्हारी बात की करामात । यह पण्डितजी के किस्से की प्रतिक्रिया है ।

महेन्द्र : इससे क्या हुआ। एकादशी ही है, एकासणा तो नही ?

राजेन्द्र प्रसाद आप अन्यथा क्यो समझ रहे हैं, आज नही तो कल ही सही।

महेन्द्र पर कल आये किसको ? फिर एकादशी से बढकर व्रत ही कौन-सा होता है, आज का फलाहार यहीं सही।

वीरचन्द्र फलाहार से काम नही चलेगा। खैर, हलुवे की मा रबडी से काम चला लेगे।

महेन्द्र इसमे कहने की क्या बात है ? रबडी, फल, शाकाहार आदि सभी से तो एकादशी सफल होती है।

वीरचन्द्र हा, एकादशी से तात्पर्य है कि अन्न को छोडकर सुबह से लेकर शाम तक कुछ न कुछ चरते रहो।

महेन्द्र वाह भाई ! खूब कही।

वीरचन्द्र . तुम क्यो चौंकते हो ? एक बात सुनी होगी तुमने एकादशी माहात्म्य की ?

महेन्द्र : अब सुना दो।

वीरचन्द्र हा, सुनानी ही पडेगी क्योकि बिना प्रमाण आजकल किसी भी तथ्य को मान्यता नही दी जाती।

महेन्द्र : क्या तुम रबडी से भी छुटकारा दिलवाओगे ? हलुए का किस्सा सुनाकर एकादशी बीच मे आ पडी और एकादशी माहात्म्य सुनाकर तुम क्या करवाना चाहते हो ?

राजेन्द्र प्रसाद . (मुस्करा कर) नही ऐसी बात नही है। यह तो आपका घर है।

महेन्द्र : फिर तो एकादशी-माहात्म्य सुना दो।

वीरचन्द्र : बात यह है कि एक ब्राह्मण किसी सेठ के यहा घरेलू-कार्य करता था। एकादशी के दिन सेठ के कहने से उसने एकादशी का व्रत रख लिया। सुबह उसे ठडाई की गिलास मिली। दोपहर को भर-पेट रबडी, फल आदि

और शाम को दूध का गिलास।

राजेन्द्र प्रसाद : (हसकर) यह क्रम तो द्वादशी से भी बढकर हो गया।

महेन्द्र यह क्रम कई वर्षों तक चला। पर दुर्भाग्यवश उसने नौकरी छोड दी और एक अन्य व्यापारी के यहा नौकर हो गया।

राजेन्द्र प्रसाद · तो घर पर थोडे ही बैठा रहता। घर बैठे रहने से तो फिर असली एकादशी हो जाती।

महेन्द्र : सुनिये तो सही। एक दिन सेठ ने पूछा कि महाराज व्रत रखेंगे, इस पर पडितजी ने हा भर ली। किन्तु ग्यारह बज गए पर न तो चाय मिली, न दूध और न ठडाई, इस पर पण्डितजी ने होशियारी से सेठ को कहा, 'प्यास लगी है।'

वीरचन्द्र : इसमे पूछने की क्या बात थी ? पानी पी लेता।

महेन्द्र . परन्तु उसे तो ठडाई आदि की याद दिलवानी थी।

वीरचन्द्र · तो मिला कुछ ?

महेन्द्र · मिलता क्या ? उत्तर मिला कि पानी पी लीजिए और वह पानी था उबाल कर रखा हुआ।

[सब हसते है]

वीरचन्द्र . पण्डितजी को एकादशी का महत्त्व समझ मे आ गया होगा ?

महेन्द्र : हा, और सेठ को भी समझा दिया गया।

राजेन्द्र प्रसाद : कैसे ?

महेन्द्र · बात यह हुई कि करीब तीन बजे दिन को उनके घर के आगे से किसी की अर्थी जा रही थी, इस पर सेठ ने पण्डितजी से कहा—जरा देखिए तो कौन मरा ?

वीरचन्द्र · पण्डितजी ने वही खडे-खडे उत्तर दे दिया होगा ?

महेन्द्र नही। वे बाहर गए और तत्काल ही वापस आकर

कहा, 'सेठ साहब, मरा तो कोई एकामशी वाला ही है, एकादशी वाला तो मर नही सकता।'

[इस पर सब ठहाका मार कर हमते हैं। उमी ममय रमेशचन्द्र प्रवेश करता है। सभी उसे देखकर प्रसन्न होते हैं। वे उसे बधाई देते हैं किन्तु पिता की उपस्थिति के कारण वह सकोचवश उत्तर नही दे पाता। उसके हृदय मे उथल-पुथल मच रही है।]

राजेन्द्र प्रसाद : (प्रसन्नता से) आओ रमेश, बैठो, कल कैसे नही आये ?

रमेशचन्द्र (गहरी नि श्वास छोड कर) क्या बताऊ ? सीमा का निरीक्षण करने गया था।

राजेन्द्र प्रसाद : क्या कोई विशेष बात थी ?

रमेशचन्द्र . विशेष ही नही, विशेष से भी अधिक। हमारे राष्ट्र की सीमा पर—उन दानवो ने आक्रमण कर दिया है। हमारी सेना भी ईट का जवाब पत्थर से दे रही है और मुझे कुछ प्रबन्ध करना है।

राजेन्द्र प्रसाद : तुम थके हुए हो, पहले स्नान आदि से निवृत्त हो जाओ फिर सभी उपस्थित-बन्धुओ का आज मुह मीठा करवायें और कल एक भोज का प्रबन्ध किया जावेगा। हमारे घर मे तीस वर्षों के बाद थाली बजी है।

रमेशचन्द्र : (भावावेश मे आकर) नही, यह कदापि न होगा।

महेन्द्र क्यो भावुक बन रहे हो ? पुत्र-जन्मोत्सव पर तो दिल खोल कर भोज करवाना चाहिए।

रमेशचन्द्र (भौहे तान कर) आप लोगो को खाने-खिलाने की पडी रहती है।

वीरचन्द्र · अभी तो भोजन-पुराण ही चल रहा है।

रमेशचन्द्र · बस ! आप तो इन भोजन-भट्टो की कथाओ को आदर्श

मान बैठे हैं। देश-काल का कुछ भी ध्यान नही है आप लोगो को।

महेन्द्र : पर पहले अपना ध्यान तो रखे।

रमेशचन्द्र : मजाक छोडिये। आज हमारे ऊपर विकट सकट छाया हुआ है। एक ओर अन्न का एक-एक दाना मूल्यवान है और दूसरी ओर आप अन्न-व्यय करने पर तुले हुए है। व्यर्थ का अन्न-व्यय करना राष्ट्र-द्रोह से कम जघन्य अपराध नही है।

महेन्द्र . किन्तु पुत्र-जन्म से बढकर दूसरा कौन सा उत्सव मनाया जावेगा ? ऐसे अवसरो पर ही तो अन्न का मूल्य आका जाता है।

रमेशचन्द्र ' झूठ, बिल्कुल झूठ। जन्मना और मरना तो होता ही रहता है, यह तो ससार का क्रम है, किन्तु भोज का खुशी से सम्बन्ध जोडना आज की परिस्थितियो के प्रतिकूल है।

महेन्द्र . आज-आज तो छूट दे दो अपने सिद्धान्त मे।

रमेशचन्द्र . नही, कदापि नही, आज से तो हमे सप्ताह मे अधिक नही तो एक समय का भोजन बचाना चाहिए, एक दिन व्रत रखना चाहिए।

वीरचन्द्र . और आज है भी एकादशी।

रमेशचन्द्र हसी मे टालने से काम नही चलेगा। हमे गभीरता से इस समस्या पर विचारना होगा।

महेन्द्र : क्या हमारे थोडे-से अन्न बचाने से खाद्य-समस्या का समाधान हो जायेगा ?

रमेशचन्द्र ' होगा क्यो नही आखिर बू द-बू द से ही तो घडा भरता है। सभी को इसी प्रकार सोचना होगा। हमे सभी को वास्तविकता का ज्ञान कराना होगा।

वीरचन्द्र देखो रमेश, तुम हमारे बीच मे बाधक मत बनो। पहले

खा-पी ले फिर तुम्हारा उपदेश कान खोलकर सुन लेंगे।

रमेशचन्द्र · (डाटकर) चुप रहिए। मैं कुछ नही सुनना चाहता। आप हलुवा, रवडी व मिष्टान्न खाएगे—गुलछर्रे उडावेंगे और हमारे अन्य भाई एक समय व्रत करके आपके लिए अन्न बचावेंगे !

राजेन्द्र प्रसाद . (कुछ सोचकर) तो जैसा तुम कहोगे, वैसा ही होगा।

वीरचन्द्र तब हम चले।

रमेशचन्द्र . नही, मैं ऐसा नही कह सकता। देखिए आपकी मुझ पर सदैव कृपा रही है। परन्तु आज आप ऐसा क्यो सोच रहे हैं ?

महेन्द्र · और तुम हम पर थोडी-सी कृपा भी नही कर सकते ?

रमेशचन्द्र मै तो आपका बच्चा हू। पर ··· (कुछ रुककर) आपको मुझे नही नही, राष्ट्र के कर्णधारो को सहयोग देना होगा, प्रतिज्ञा करनी होगी कि जब तक राष्ट्र पर सकट रहेगा, देश की खाद्य-स्थिति नही सुधरेगी, हम कहीं किसी प्रकार के भोज मे शामिल नही होगे।

महेन्द्र रमेश !

रमेशचन्द्र जी, मैं आपसे निवेदन करता हू कि खुशी या गमी का सम्बन्ध होता है मन से। भोज के होने न होने से कोई अन्तर नही पडता।

राजेन्द्र प्रसाद तो तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा।

रमेशचन्द्र आज हमे हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तयार रहना है—त्याग की बलिवेदी पर अपने-आपको चढा देना है—अपनी मातृ-भूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देना है। आज 'फूल्स फीस्ट एण्ड वाइजमेन ईट" का युग नही रहा, आज 'फूल्स फीस्ट एण्ड फूल्स ईट' समझना चाहिए।

मेहनताना

पात्र

हरखू : एक लुहार

सुखू : हरखू का पुत्र

रूपा : हरखू की पत्नी

कमल : एक विद्यार्थी

रोहिणीरमण : कमल के पिता

दृश्य १

[**स्थान** : शहर से कुछ दूर—लुहारो की बस्ती मे हरखू का मकान । समय शाम के करीब सात बजे । हरखू विचार-मग्न बैठा है ।]

हरखू : (कुछ सोचते हुए गभीर मुद्रा मे) ····· हे राम, मेरे सुखू को बचाना । बेचारा भोला-भाला है । न मालूम अभी तक क्यो नही लौटा ? शायद कही काम गया हो । उसकी मा से पूछता हू । (आवाज लगाता है) सुखू की मा··· · ···!

[रूपा का प्रवेश]

रूपा : हां, क्या चाहिए ?

हरखू : कुछ नही, सुखू को कही भेजा है क्या ?

रूपा . भेजा तो नही है, काम पर से ही नही आया ।

हरखू : तो कुछ कह गया था क्या ?

रूपा : नही तो ।

हरखू : हमेशा तो चार-पाच बजे लौट आता है।

रूपा . सोच तो मैं भी रही थी।……कही कोई बात तो नही हो गई है ?

हरखू · बात करने वाला तो नही है। (कुछ रुक कर) पर, हा आजकल तो बिना बात भी तो बात बना ली जाती है। याद आते है मुझे वे दिन — मेरे जीवन के वे दुख के दिन जब मेरे सुखू को झूठा मुकदमा बनाकर फसाया गया था। हे राम, उसे—उस बेगुनाह को बहकाकर हामी भरवा ली गई और डेढ़ वर्ष की सजा भी दिला दी गई।

रूपा : पर अब इससे क्या ? गरीब की सुनता कौन है ? आपने तो वकील भी नही किया।

हरखू : रूपा ! अब मेरे घावो को हरा मत करो। बडी मुश्किल से मैंने वे दिन निकाले है। मै तो मरा न जिया। जाति मे मेरी नीची हुई।

रूपा : इसने नीची की क्या बात है ? चोरी-जारी मे सजा हुई नही। एक भोले-भाले गरीब पर झूठा मुकदमा बनाकर जाल फैलाया जाय तो इसमे उसका क्या कसूर है ?

हरखू : कसूर ! कसूर तो सब हमारा ही है क्योकि हम गरीब है। हम ढोग नही कर सकते। हम धोखाधडी नही कर सकते बल्कि अपनी मेहनत करके रूखी सूखी खाते है।

रूपा : इसीलिए तो आज हम नीचे गिने जाते है। कोई हमारा वकील भी नही बना।

हरखू . वकील तो इसलिए नही बना कि हम उन्हे पैसे नही दे सके।

रूपा . मैने तो आपसे पैसे देने के लिए कहा था। अपनी चादी की कडिया आपको बेचने के लिए दी थी।

हरखू . कड़िया ? केवल तीस रुपये मिले उनके बदले और वकील साहब मागते थे पूरे एक सौ एक कौडी भी कम नही।

रूपा : और एक सौ रुपये हमने हमारी जिन्दगी मे कभी देखे भी नही। तभी तो वकील पैसे वाले हो जाते है। छोटे से मुकदमे के इतने रुपये ?

हरखू रूपा, तुम उसे छोटा-सा मुकदमा समझ रही हो। उस दुष्ट सेठ ने पैसो के घमण्ड मे न मालूम कैसा जाल फैलाया। उसने तो डाके का मुकदमा बना दिया था और वकील साहब ने भी मुझ गरीब की एक न सुनी। मैंने उसके पाव पकडे पर उनका हृदय नही पिघला।

रूपा फिर भी था तो झूठा ही। इन लोगो को मरना नही है ?

हरखू तभी तो बात का बतगड बना डाला। बात तो इतनी ही थी कि सुखू ने सेठ की गाडी का भोपू नही सुना और चलता रहा। सेठ ने मोटर से उतर कर उसके दो चाटे मार दिये।

रूपा . बिना बात मार कौन खाये ?

हरखू फिर सुखू जवान जो ठहरा। उसने भी उसे धक्का दे दिया होगा।

रूपा तो इसमे क्या गलती थी सुखू की ?

हरखू गलती यही थी कि जब वह मुकदमे के लिए पैसे नही दे सकता तो झगड़ा क्यो मोल ले ? इसीलिए सेठ ने झूठी रपट दे दी कि सुखू ने उसके गले से सोने की जजीर तोड ली।

रूपा पुलिस वालो ने भी तो जाच नही की।

हरखू जाच की और पड़ताल भी की। तभी तो सुखू को बहका-कर हाकिम के सामने हा भरवा दी। मेरे बेटे को क्या पता था कि ये भयकर साप होते हैं जिनका काटा हुआ

पानी भी नही मागता।

रूपा · आपने भी तो नही समझाया उसे।

हरखू . मैं क्या समझाता ? थानेदार जी ने कहा था कि हा भरने से छूट जायेगा, हाकिम साहब बडे दयालु है, आज ही छोड दे गे।

रूपा खैर अब जाने दो इन बातो को। (रु धे हुए कण्ठ से) पानी लाऊ ?

हरखू . ले आओ। फिर मैं सुखू को ढू ढने जाता हू।

रूपा कहा जायेगे ? कोई चार-छ साल का थोडे ही है। पूरा जवान है।

हरखू · कही तालाब की ओर तो नही चला गया ?

रूपा : वह आपके बिना अकेला कभी कही नही जाता ·· और तैरना भी तो अच्छी तरह जानता है।

हरखू तैराक तो है पर "तैरू री राड पहले होवै है।"

रूपा : अच्छा, तो मैं पानी ले आती हू।

[रूपा का प्रस्थान]

हरखू · (फिर सोचने लगता है) दिन जाते क्या देर लगती है। कल की बात है। सुखू को जेल हुई। डेढ वर्ष काट कर आया अब बेचारा मुझे मदद देता है। मेरा तो बुढापे का सहारा ही है। दिन भर मजदूरी करता है। कभी डेढ और कभी दो की कमाई कर ही लाता है। बस इतने मे दाने तो सुख के मिल ही जाते है।··· ~ पैसे ···· पैसो का क्या करना है हमे—कोई महल तो बनाना नही। हमारे बाप-दादा भी इसी कुटिया मे अपना जीवन बिता गए। मैं भी इसी मे पाव पसार दू गा।

[इतने मे सुखू आता है।]

हरखू : कहा रह गए थे बेटा ? मैं तो फिक्र कर रहा था।

सुखू कही नही। योंही थोडी देर हो गई।

हरखू किसी से लडाई-झगडा तो नही हो गया ?

सुखू · नही तो।

हरखू तो क्या तालाब स्नान करने गये थे ?

सुखू स्नान करने तो नही गया था परन्तु जब मैं घर आ रहा था तो डूबते हुए एक बच्चे को बचाया जरूर। फिर उसके घरवाले मुझे अपने साथ ले गए।

हरखू यह तो बहुत अच्छा किया तुमने। डूबते हुए को बचाना अपना धर्म है।

सुखू (अगोछे मे से कुछ नोट निकाल कर पिता के आगे रखते हुए) लीजिये, उस लडके के पिताजी ने ये एक सौ रुपये दिये हैं।

हरखू · सुखू तूने यह अच्छा काम नही किया। क्या किसी को बचाने के बदले मे पैसे लिये जाते है ?

सुखू मैंने तो नाही कर दी थी पर उन्होने जबरदस्ती मेरी जेब मे डाल दिये। मैं फिर फेंक थोडे ही देता।

हरखू · कहा है उनका मकान ?

सुखू : थोडा दूर है।

हरखू चल मेरे साथ।

सुखू चलिए।

[इतने मे रूपा पानी लेकर आती है। हरखू पानी पीता है। फिर वे प्रस्थान करने लगते हैं।]

रूपा · क्या फिर यह किसी से लड़ आया है ?

हरखू नही।

रूपा · तो कहा ले जा रहे हैं आप इसे।

हरखू · कहीं नही, थोडा काम करके आते हैं। डरो मत।

[दोनो का प्रस्थान।]

दृश्य २

[श्री रोहिणीरमण का मकान । वे अपने कमरे मे बैठे है। लोग बधाई देने आ रहे है। वे बडे प्रसन्न दिखाई दे रहे है। उनका इकलौता लाल कमल डूबने से बच गया इससे अधिक और क्या खुशी की वात हो सकती है। सभी खाने-पीने मे मस्त हो रहे है। हसी के फव्वारे छूट रहे है।

सुखू हरखू को उसी मकान के आगे लाकर खडा कर देता है।]

हरखू . क्या यही मकान है ?

सुखू · हा बापू।

हरखू क्या इसी घर का वच्चा डूव रहा था ?

सुखू · हा।

हरखू : (भाव बदल कर) इसी घर का वच्चा ! (मन ही मन रोष से भरकर सोचता है डूबने देते—एक निर्दयी के लडके को—धन के मद मे डूबे हुए के लडके को डूबने देते पानी मे, पता लग जाता।)

सुखू . क्या सोच रहे हो बापू—चुप कैसे हो गए ?

हरखू (जैसे नीद से उठा हो) कुछ नही, कुछ नही ! वह फिर सोचने लगा। उसका हृदय झकझोरने लगा। तीन साल पहले का दृश्य उसकी आखो के सामने नाचने लगा।

सुखू · वापू, तो चलें भीतर ?

हरखू : हा चलो।

[दोनो जाली के दरवाजो से भीतर झाकते हैं। सुखू को देखकर अन्दर से कमल दरवाजा खोलकर उन्हे अन्दर ले जाता है।]

रोहिणीरमण (सुखू को देखकर) फिर कैसे आये सुखू बेटा ?

सुखू ये मेरे पिताजी है। आपको बधाई देने आये है।

रोहिणीरमण : (हरखू का हाथ पकड कर आदर से बिठाते हुए) आओ आओ ऊपर बैठो।

हरखू (नीचे ही बैठते हुए) नही बस ठीक हू—यही ठीक हू। (फिर अपने अगोछे मे बधे एक सौ रुपए के नोट निकाल कर रोहिणीरमण के आगे रखते हुए) लीजिये ये रुपये।

रोहिणीरमण काहे के रुपये ? ये तो मैंने खुशी से दिये हैं सुखू को।

हरखू और मैं भी खुशी से दे रहा हू। एक मुकदमे का मेहनताना है जी। डाके का मुकदमा है।

रोहिणीरमण डाके का मुकदमा है ? किसने डाका मारा—कब मारा—साफ-साफ कहो।

हरखू . मुझे पहिचाना आपने ?

रोहिणीरमण . कुछ ख्याल नही पड़ता।

हरखू : वकील साहब, मैं वही लुहार हू जो तीन वर्ष पहले आपके इसी कमरे के बाहर खडा आपकी मिन्नते करता रहा। फिर आपको तीस रुपये देना चाहा पर आपने मेरी एक न सुनी। आपने एक सौ रुपये मेहनताने के मागे पर भला मैं गरीब कहा से लाता इतने रुपये ? समय की बात है वकील जी। आज यही मेरा बेटा सुखू है जिसने आपके लडके को बचाया।

[रोहिणीरमण अवाक् रह जाते है। उनकी आखो मे आसू छलक आते है।]

रोहिणीरमण (आसू पोछते हुए) रखो हरखू ये रुपये। मुझे माफ कर दो। मैने आज एक पिता के हृदय को पहचाना है ··· ये रुपये रखो। आयन्दा मै गरीबो के मुकदमे मुफ्त लडा करूगा। तुम मुझे ·····

हरखू : (रुपये फेंक कर तेजी से निकलते हुए) ठीक है वकील साहब, पर हम गरीब किसी की भलाई करना अपना फर्ज समझते हैं और उसके बदले मे मेहनताना नही लेते। वकील जी·········· ··

[हरखू शीघ्रता से दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाता है, सुखू भी उसके पीछे-पीछे प्रस्थान कर देता है। कमरे मे उपस्थित सभी व्यक्ति चित्रलिखित से बैठे देखते रह जाते हैं।]

[पटाक्षेप]

मिलन

[**स्थान** राजस्थान का एक गाव, गाव मे चमारो की बस्ती। च्चे मकान की साल मे बैठा कालू कुछ सोच रहा है।

समय . शाम के करीब ७ बजे।]

कालू (चिन्तित-सा) क्या सोचा था, क्या हो गया ?······ईश्वर ·· ईश्वर · धर्म ·····धर्म चिल्लाने वाले ढोगी········· न्याय के नाम पर मिल गया न्याय······पढाई की······गाव की बिरादरी मे ही नही, सारी जाति मे सबसे अधिक पढा······ पर, पर क्या ? (कुछ सोचता है)
ऊ हू ··· समझ मे आया पचायत क्या होती है · ···सुना था पचो मे परमेश्वर निवास करते है··· परमेश्वर है क्या बला ? घट-घट व्यापी है जो ···(ऊपर देखकर) यह छत जैसे फटकार रही है मुझे। खैर, यह इतना ही तो कहती है कि पचायत कराने क्यो गये थे ? नही, यह मुझे शान्ति देती है ·· तो क्या इसे जला दू और अपने आप को जला लू ? (भावा-वेश मे) जोहर की कथाए बहुत पढी हैं, सुनी भी है। पतियो के लिए अपने प्राणो की आहुति देने वाली नारियो के किस्से···

आज जमाना बदल गया है .....बदलता नही तो मैं कालेज तक कैसे पहुँचता (चुप हो जाता है)......(फिर उठकर) (इधर उधर दृष्टिपात करते हुए) तो क्या अब मेरे जीवन मे कुछ शेष नही रहा ? . चमार हू तो क्या मुझे जीने का हक नही है ? कहा (जोर से) से लाऊगा मै दो हजार रुपये दण्ड के... उफ ?

[इतने मे दरवाजे पर खटखट की आवाज आती है। वह शकित भाव से दरवाजा खोलता है। एक बाला प्रवेश करती है।]

कालू (एक नि श्वास छोडते हुए) मेरी राम ! कैसे आई हो ?

रामली : (लज्जित-सी होकर) हमारे फूटे भाग को बताने के लिए।

कालू . (उसकी ओर अविश्वास की दृष्टि से देखते हुए) क्या कहा, क्या वही फैसला रहा ?

रामली . हा। तीन दिन और तीन रात तक पचायत हुई और... ..

कालू : मैने तो पहिले ही कहा था कि यहा होना-जाना कुछ नही।

रामली . पर बिरादरी के नियम .. --

कालू : बिरादरी के थोथे नियम अब ढोग हो गए हैं।

रामली : तो अब क्या करे ?

कालू . अब ! अब तुम्हारा और मेरा यहा रहना मुश्किल हो गया है। तुम्हारे मा-बाप और ससुराल वाले मेरे खून के प्यासे हो गए है।

रामली . राम रे राम ! आप भी उन्हे मेरे ससुराल वाले मानते है ? मा कहती है कि जब मैं दो वर्ष की थी तभी मेरी शादी कर दी गई। भला तुम्ही बताओ उस समय मैं क्या जानू ? (बात बदलते हुए) हा, आपने आखिर यह पचायत बुलाई ही क्यो ?

कालू : मुझे क्या पता कि ये लोग सरकार के कानून से भी बढकर फैसला दे गे।

रामली सरकार का क्या कानून है ?

कालू कानून साफ है। कोई भी जोडी हाकिम के सामने जाकर अपना विवाह कर सकती है।

रामली फिर क्या 'वैर चुकाना नही पडता ?

कालू वैर किस बात का ? फिर तो 'मेल' हो जाता है। (मुस्कराता है)

रामली · तो हम भी हाकिम के सामने चले—सरकार माई-बाप है।

कालू पचायत ने मारा फैसला क्या सुनाया ?

रामली सुनाया क्या (आवेश मे आकर) हमारा तो दिल ही निकाल लिया। जब मैंने फैसला सुना तो मरने-जैसी हो गई।

कालू राम ! अब उपाय ही क्या है ?

रामली उपाय ?

कालू (नि श्वास छोडते हुए) मुझे क्या पता था कि न्याय के नाम पर मौत का हुक्म सुनाया जायेगा।

रामली दो हजार रुपयो का जुर्माना हमारे लिए तो मौत का हुक्म ही है।

कालू · हमारे पास दो सौ रुपये का भी तो माल नही है।

रामली मेरी मा जिसने मुझे दूध पिलाया अब मुझसे बात करने मे भी पाप समझती है। जब से पचायत बैठी है मुझे धरती सुलाया जाता है, रोटी हाथ मे दी जाती है जैसे मैंने कोई मिनख मार दिया है।

कालू (मुस्करा कर) क्या अब भी मिनख मारना बाकी रह गया है ? मुझे नही मारा ?

[दोनो जोर से हसते हैं व एक दूसरे के समीप हो जाते है।]

कालू (पुन बात को प्रारम्भ करते हुए) अच्छा बता तो जरा पच कौन कौन थे ?

रामली गोवर, श्योजी, गुल्ला, रावत, गुणपत, होठला व जोगला।

कालू · (वीच मे वात काट कर) ये पचायत करने वैठे थे ? अपने घर मे नही देखते ?

रामली · घर मे देखते तो यह वात ही क्यो होती ?

कालू ये तो कलजुगी देव है कलजुगी, जो पूजा से राजी होते है। तुमने सुना ही है——

"कलजुगी देव प्रगट्या दूजा,
पग पग पर माग रचा पूजा।"

रामली . अव रहने दो इनकी वाते। वेचारे काना को भी तो कुए मे कूदना पडा था——इनके फैसले के कारण······झूठे फैसले के कारण·········

कालू और अब हमारे लिए क्या वच गया है ? इन दुष्टो से वच निकलना भी तो सरल नही है।

रामली : अभी भाग चले ?

कालू यह सोच लो कि फिर कभी गाव मे नही आ सकेगे।

रामली : ऐसे गाव मे तो आने का नाम लेने से ही पाप लगेगा।

कालू : तो चले—एक वार इस झोपडे मे मिल ले। इसमे मेरा जन्म हुआ, इसी मे पला, और इसी मे अपने मा-बाप को मरते देखा—अनाथ मुझे वे छोड गये थे, ठाकुर ने पढाया पर वे भी अब चल वसे ··।

रामली : (बीच मे ही) यदि ठाकुर होते तो आज कुछ तो मदद करते।

कालू : मदद क्या ? उनके सामने बोलने की हिम्मत किसी मे नही थी।

रामली : ठाकुर का तो इशारा ही काफी होता।

कालू : नही, ऐसी बात तो नही है। आजकल के पच लोग ठाकुरो से नही डरते।

रामली : पर आखिर तो कुछ काम आते।

कालू : अच्छा तो अब शीघ्रता करो। हमे तय करना है कि अब क्या किया जाय।

रामली : तय क्या करना है ? आप जैसा कहे ....

कालू (उसके सिर पर हाथ रखते हुए) तो पलटोगी तो नही ?

रामली : क्या आपको मेरा विश्वास नही ?

कालू विश्वास नही होता तो मैं अपना जीवन तुम्हारे लिए क्यो अर्पण करता। पर कचहरी मे जाने पर औरते बदल जाती है।

रामली : (रोने लगती है)

कालू . अरे ! तुम तो मजाक मे ही रोने लगी।

[इतने मे कोलाहल सुनाई देता है। वे झोपडे से बाहर आकर देखते है तो दग रह जाते है। सामने से लगभग पचास व्यक्ति हाथो मे लाठियां व सेले लेकर उसी ओर तेजी से आ रहे है। उनमे रामली के ससुराल वाले आगे है।]

कालू (हड़बडा कर) लाठी कहा है · मैं ·· ·

रामली ऐसा मत करो, हम भाग चले।

कालू क्या अन्याय के सामने घुटने टेक कर ?

रामली नही, नही आप भाग जाइये, मुझे मरने ·· ·

कालू : क्या कहा ? (उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर) मेरी राम ! मेरा मरना-जीना तो अब तुम्हारे साथ ही होगा।

रामली (आसू बहाते हुए) लेकिन ·· ··

कालू · घबराओ नही। ये मेरे खून के प्यासे हैं। पीने दो इन्हे मेरा खून और अपनी राक्षसी प्यास बुझाने दो।

रामली तो क्या होगा अब ? भगवान् बचाओ !

कालू : क्या भगवान् बचाने आयेंगे ?

रामली : और किसे कहे। मा-बाप भी जब मारने पर उतारू है।

कालू : (आसू बहाते हुए)······राम, अब कोई उपाय नही है।

मरना···मरना ही एक उपाय है। अब एक बार मेरी ओर देख लो। आज का मिलन·········(रामली का हाथ पकड कर) एक बार मरना तो है ही फिर इसमे सोच किस बात का ?

[कोलाहल निकट सुनाई देने लगता है।]

रामली : (भयभीत होकर) अरे ! यह तो ········

कालू : (हडबडा कर)ऐं······ऐं ·····भीड तो पास ही आ गयी है। अ······व······

रामली · (इधर-उधर देखकर) ऐं······ऐं ····

[इतने मे भीड पास आ पहुँचती है। कालू लाठी ढूढता है। कुछ ही क्षणो मे झोपडी आग की लपटो मे स्वाहा होती-सी दिखाई पडती है।]

[पटाक्षेप]

पहले कहते तो…

पात्र

केदार	एक रोगी
बद्री	केदार का बडा भाई
पी० एम० ओ०	प्रिंसीपल मेडिकल ऑफिसर
डाक्टर	ड्यूटी डाक्टर
नर्स	
व	
कम्पाउण्डर	

[**स्थान** राजकीय विशालकाय अस्पताल का एक कक्ष जहा अनेकानेक रोगी अपने स्वस्थ होने की आशा मे समय व्यतीत कर रहे है। पलग व्यवस्थित रूप से लगे हुए है, नर्स चौकन्नी होकर बैठी है क्योकि पी० एम० ओ० साहब राउण्ड मे आने वाले है।

कक्ष मे एक ओर केदार वेदना से व्यथित है। रात के नौ बज रहे हैं। उसका बडा भाई बद्री उसे सान्त्वना दे रहा है। केदार ज्यादा पढा-लिखा नही है पर बद्री एक माध्यमिक पाठशाला का प्रधानाध्यापक है।]

केदार . अरे भइया ! तुम्हे कितना कष्ट हुआ। यह मेरा आखिरी प्रणाम है। मैं बच नही सकता।

बद्री क्यो केदार, क्या ज्यादा दर्द हो रहा है ? डाक्टर साहब ने कहा है कि नीद मत लेने देना।

केदार परन्तु मै तो गहरी नीद मे सोने वाला हू, जिस नीद से फिर जगाया नही जा सकता।

बद्री चल पगले, क्या बकते हो ? नौ बज चुके हैं, अब तो दस घण्टे की बात और है।

केदार फिर ?

बद्री चौबीस घण्टे बाद तो साप का काटा हुआ व्यक्ति खतरे से बाहर हो जाता है। जिस प्रकार चौदह घण्टे निकल गए उसी प्रकार दस घण्टे और निकल जायेंगे।

केदार : ठीक है, परन्तु मेरे लिए तो एक-एक क्षण निकलना भी कठिन हो रहा है। [आसू बहाता है।]

बद्री : (उसके आसू पोछते हुए) अरे, बच्चो की तरह क्यो रो रहे हो ? देखो तुम्हारे पास के पलग पर लेटा हुआ बारह वर्ष का बच्चा भी नही रोता। फिर तुम्हारे शरीर मे तो जहर के लक्षण भी नजर नही आते।

केदार : कैसे ?

बद्री : डाक्टर साहब ने जिस समय तुम्हारे बाये हाथ पर इजेक्शन लगाया था तो कहा था कि यदि जहर का प्रकोप होगा तो कुछ समय बाद दाहिने हाथ पर जहरी फफोला हो जायेगा।

केदार : (कुछ आश्वस्त होकर) भइया, मेरी एक विनती है, सुनोगे ?

बद्री : कहो, क्या कहना चाहते हो ?

केदार : मैं चाहता हू कि मरने के बाद मेरी मिट्टी खराब न की जाय, मेरी लाश का चीर-फाड न किया जाय। (रोने लगता है)

बद्री : (चुप रहने का इशारा करते हुए) कैसी बाते करते हो, अस्पताल पीडा दूर करने के लिए है मारने के लिए नही।

केदार : आपको क्या पता। यमराज तो जिन्दो को मारता है, पर ये डाक्टर लोग मरे हुओ को भी फिर मारते है।

बद्री : पर वह कैसे ?

केदार जीवित रोगी के शरीर की तो चीर-फाड करते ही है, मरे हुए को भी ये नही छोडते ।

बद्री · कैसी बाते करते हो ? धैर्य रखो, भगवान् सब ठीक करेगे, राम-राम जपो ।

केदार उफ, मरा !

बद्री पर केदार क्या तुमने साप को देखा था ?

केदार हा, जब मै पानी भर रहा था · ·उफ · ·मटकी मे कहा से आ गया ? वह तो मेरा काल था, काला कलन्दर !

बद्री पर पडौसी तो कह रहे थे कि तुम उस साप को दो दिन पहले पकड कर लाए थे और उससे खेल खेलते थे। खेलते समय ही उसने तुम्हे काटा है ।

केदार (बीच मे ही कराहते हुए) हाय राम !

बद्री देखो केदार ! सर्पो से खेल नही खेलना चाहिए—साप का कोई रिश्तेदार नही होता —उनका विश्वास नही करना चाहिए, दुष्ट व्यक्ति और साप मे कोई भेद नही होता ।

केदार नही भाई, मैं आजकल साप पकडता ही नही हू पडोसी तो मुझ पर लगते हैं ।

बद्री अच्छा यह तो ठीक है पर केदार मेरी एक बात मानोगे ?

केदार हा, क्यो नही, आप मेरे बडे भाई हैं—पिता की जगह है । आप जो कहेगे वही करूगा । परन्तु मैं जिन्दा नही रह सकता । (आखो से फिर आसू बहाता है)

बद्री : आज वे लोग खुश हो रहे हैं जिनके घर मे तुम साप छोड देते थे, जिन्हे पैसो के लिये तुम तग करते थे ।

केदार (वेदना से) सच है भैया । सच ·· ·· ···

बद्री : तुमने यह कभी नही सोचा कि जिनके घर मे द्वेष-वश या पैसो के लिए मैं साप छोड रहा हू उनको भी यह काट सकता है। वे भी मर सकते हैं।

केदार : (भावावेश मे) यदि यह सोचता तो ऐसा काम नही करता—मनुष्य स्वार्थवश राक्षस बन जाता है।

बद्री : तो अब तुम सौगन्ध लो कि आयन्दा के लिये न तो साप पकड़ोगे और न ही दूसरों को इस प्रकार तग करोगे।

केदार : हा, मैं सौगन्ध लेता हू । पर मैं······

बद्री : घबराओ नही, ठीक हो जाओगे। (सिर पर हाथ फेरता है)

केदार . भाई ! थोडा पानी पिलाओ। अरे ! मेरा सारा बदन टूट रहा है, गला सूख रहा है, जीभ खिच रही है। ओह ! हाय राम ············

[इतने मे पी० एम० ओ० साहब, ड्यूटी डाक्टर, व कम्पाउण्डर प्रवेश करते हैं।]

पी० एम० ओ० : (केदार के पास आकर) क्यो पण्डित, क्या हाल है ?

केदार : (कुछ उठते हुए) ठीक नहीं है डाक्टर साहब, मै तो मर रहा हू, परन्तु मेरे मरने के बाद चीरा-फाडी मत करना। (रोने लगता है)

पी० एम० ओ० : रोओ मत केदार, तुम ठीक हो जाओगे, बिल्कुल ठीक।

केदार : आपकी कृपा से ही ठीक हो सकता हू।

पी० एम० ओ० : क्यो नीद तो नही आ रही है ?

केदार : नही ? नीद कहा से आयेगी ?—मेरा तो सारा शरीर टूट रहा है, बेचैनी बढ रही है।

पी० एम० ओ० : (डाक्टर से) एक इजेक्शन और लगाओ।

[डाक्टर और कम्पाउण्डर दोनो इजेक्शन तैयार करने

चले जाते है ।]

केदार · क्या एक इंजेक्शन और लगायेंगे ? अरे इससे क्या होगा ? मैं मर रहा हू मुझे तो कुछ दीजिए ।

पी० एम० ओ० क्या लेना चाहते हो ?

केदार · थोडी-सी भग दिलाइये नही तो मैं मर जाऊगा ।

पी० एम० ओ० · अरे, तुम भग भी पीते हो ! कितनी पीते हो ?

केदार · सिर्फ दस तोले ।

पी० एम० ओ० (आश्चर्य से) ऐ ! (कुछ रुककर) नही तुम भग नही पी सकते ।

केदार : नही पी सकना ? तो मुझे आप अस्पताल से छुट्टी दीजियेगा । आप तो इस तरह मुझे मार देंगे ।

पी० एम० ओ० हम मार नही रहे है, बचा रहे हैं ।

केदार (कराहते हुए) तो भग नही तो अफीम तो खा सकता हू । आधा तोला अफीम तो मगवा दीजिये जिससे रात तो कटे—कल फिर देखा जायेगा । (वापस लेटते हुए) हे राम ! कहा आ फसे !

पी० एम० ओ० (भौचक्के से होकर) अरे, तुम अफीम भी लेते हो और वह भी आधा तोला । ओह ! माई गॉड ! नही, तुम अफीम नही ले सकते । (नर्स की ओर इशारा करते हुए) बी केयरफुल, ही शुड नॉट टेक ऐनी इन्टोक्शीकेशन ।

नर्स वेरी वैल सर !

पी० एम० ओ० . (बद्री मे) आप तो पढ़े-लिखे व समझदार हैं, आप भी नही रोक सकते ।

केदार · (बात काट कर) ये बेचारे क्या रोकेंगे डाक्टर साहब, मुझे आप बचाना कहा चाहते हैं । अरे ! मैं तो मर रहा हू । आप भग पीने नही देते, अफीम खाने नहीं देते

तो क्या मैं टुनेल की गोलिया ले सकता हू ? वे दो ही मंगवा दीजिए। अब मेरा गोलिया लेने का समय हो गया है।

पी० एम० ओ० : (एकटक देखते हुए स्तब्ध से हो जाते हैं फिर कहते है) अरे ! तुम दो टुनेल खा सकते हो—एक टुनेल का दसवां हिस्सा एक साधारण व्यक्ति को एक दिन तक बेहोश रख सकता है। और तुम ?

[इतने मे ही डाक्टर व कम्पाउण्डर इजेक्सन लेकर प्रवेश करते है।]

डाक्टर · सर ! इजेक्शन तैयार है।

पी० एम० ओ० . डाक्टर ! इसे इजेक्शन की कोई जरूरत नही। (केदार से) जहरी, महान् जहरी हो तुम, दो छटाक भग, आधा तोला अफीम व दो टुनेल—कैपसूल रोज खाने वाला व्यक्ति साप से तो क्या यमराम से भी नही मर सकता। तुमने यह पहले क्यो नही बताया ? पहले कहते तो सरकार के चालीस रुपये तो व्यर्थ नही जाते। क्यो तुम्हारे दो इंजेक्शन लगवाए जाते और क्यो हम इतनी परेशानी मोल लेते। तुम स्वतत्र हो, सुबह ही अपना बिस्तर गोल करके चले जाना।

[सब आश्चर्यान्वित हो जाते हैं।]

[पटाक्षेप]

••

त्यागपत्र

••

पात्र

श्री वर्मा	प्रधानाचार्य
श्री शर्मा	प्राध्यापक राजनीति-विज्ञान
श्री जैन	प्राध्यापक दर्शन-शास्त्र
घीसू	चपरासी

दृश्य १

[**स्थान** कॉलेज का एक बड़ा-सा सुसज्जित कमरा जिसमे प्रधानाचार्य बैठते हैं। कमरे के बीच मे एक टेबुल, कुछ कुर्सिया करीने से लगी हुई हैं, किंचित् दूरी पर एक सोफा-सेट रखा हुआ है, इसी पर प्रिंसिपल श्री वर्मा लेटे हुए आराम कर रहे हैं। दिन का एक बजा है। उसी समय घीसू प्रवेश करता है।]

घीसू (प्रवेश करके) सर ! प्रोफेसर शर्मा साहब ने स्लिप भेजी है।·········मैंने तो कह दिया था कि साहब आराम कर रहे है पर उन्होने बहुत कहा-सुनी की, इसलिये अन्दर आना पडा।

प्रिंसिपल . (स्लिप लेते हुए) अच्छा भेज दो। (वे बैठ जाते है)

शर्मा . (प्रवेश करके) नमस्ते जी ! आपको असमय मे कष्ट दिया, क्षमा कीजिये।

वर्मा (चश्मा लगाते हुए) नही-नही, इसमे कष्ट की कोई बात

नही। तशरीफ रखिए।

शर्मा · (कुर्सी पर बैठ कर) सर, बात ऐसी है कि मेरा स्थानान्तरण हो गया है। (स्थानान्तरण-आदेश देते हुए) सर, मै चाहता हू कि मेरी कठिनाइयो को देखते हुए मुझे शीघ्र हो यहा से रिलीव करने की कृपा करे।

वर्मा . ठीक है। कोई बात नही। आपकी सुविधा को देखते हुए जब चाहेगे रिलीव कर देगे। (स्थानान्तरण-आदेश को लेकर) अच्छा तो अब आप आधा घण्टे बाद आने का कष्ट करे।

[शर्मा का प्रस्थान]

[श्री वर्मा स्थानान्तरण-आदेश को ध्यान से पढते हुए घण्टी बजाते हैं। घीसू प्रवेश करता है।]

घीसू . जी साहब !

वर्मा प्रो० शर्मा को बुलाना।

[घीसू का प्रस्थान]

[किञ्चित् काल बाद शर्मा प्रवेश करते हैं।]

शर्मा श्रीमान् ने मुझे याद किया ?

वर्मा · (खासते हुए) हा।

शर्मा : फरमाइये ?

वर्मा बात ऐसी है कि आपको रिलीव करना सभव नही हो सकेगा।

शर्मा (आश्चर्य से) क्या सभव नही हो सकेगा ? श्रीमान्......

वर्मा · (बीच मे ही बोल उठते हैं) हा, बात ऐसी है कि आपके स्थानान्तरण-आदेश मे यह स्पष्ट नही लिखा गया है कि आपके स्थान पर नियुक्त व्यक्ति के आने के पूर्व भी आपको रिलीव किया जा सकता है।

शर्मा : (क्रोध को दबा कर शान्ति से) सर ! आपको मेरी कठिनाइयों का ज्ञान है। मेरी वृद्धा माताजी चलने-फिरने मे असमर्थ हैं, पत्नी गर्भावस्था मे है और अस्पताल मे दाखिल है, मै स्वय अस्वस्थ रह रहा हू।

वर्मा ठीक है, मेरी सहानुभूति आपके साथ है।

शर्मा तो इन विषम परिस्थितियो को देखते हुए क्या आप उचित कार्यवाही नही कर सकते ?

वर्मा परन्तु मि० शर्मा, मैं तो लाचार हू।

शर्मा सर आपका डिस्क्रीशन भी है।

वर्मा यह मैं मानता हू कि आपको बहुत-सी कठिनाइया है पर मैं तो कागज की बात कागज के आधार पर ही करता हू।

शर्मा . (तिलमिलाते हुए) सर, जरा सोचिये कि कागज के आधार पर ही सारा ससार नही चलता। मै आपसे निवेदन करता हू कि ....।

वर्मा (घडी की ओर देखते हुए) मैं आपसे कह चुका हू कि आप ऊपर से हुक्म ला सकते है।

शर्मा क्या यह मेरे हाथ की बात है ?

वर्मा पर आप यहा के विद्यार्थियो का हित भी तो नही सोच रहे है। यहा पढाई का हर्ज नही होगा ?

शर्मा . (जेब मे से कागज निकाल कर प्रिंसिपल के हाथ मे देते हुए) देखिए सर, प्रो० खण्डेलवाल ने मेरे पीरियड्स लेने को स्वीकृति लिखित रूप मे दे दी है। वे तब तक मेरे पीरियड्स लेने के लिए राजी हो गए है जब तक मेरे स्थान पर दूसरे महानुभाव नही आ जाते।

वर्मा : ठीक है, पर मैं प्रो० खण्डेलवाल के लिख देने से वाध्य नही हो सकता। मैंने जो कह दिया है उसे आप सुन चुके है और···

शर्मा . (बीच मे बोलते हुए) देखिए आप भी इन्सान हैं। आपके भी ········

वर्मा : (क्रोधित होकर) यह उपदेश रहने दीजिए, आप कमरे से निकल जाइये—अभी निकल जाइये।

[शर्मा का गिडगिडाते हुए प्रस्थान]

दृश्य २

[स्थान · श्री शर्मा का किराये पर लिया हुआ मकान। वे अपने ड्राइग रूम मे बैठे हुए हैं। मेज पर पुस्तकें बिखरी पडी है। वे अर्द्ध-विक्षिप्त से दिखाई देते है। सामने दीवार पर उनका तथा उनकी पत्नी शीला का चित्र टगा हुआ है। कुछ देर बाद वे यकायक कुर्सी से उठकर कमरे मे टहलने लगते हैं।]

शर्मा (टहलते हुए) वाह रे ससार ! आज मुझे ज्ञात हुआ कि इस सृष्टि मे अभी तक ऐसे लोग बचे हुए है······(रुक कर) हैं··· तो क्या मैं रिलीव नही किया जा सकता ······?

सुन रखा था – नौकरी·· नौकरी (फिर कुछ रुककर)······

तो क्या मैं त्यागपत्र दे दू ? (कुछ आश्वस्त होकर) हा ठीक है······ त्यागपत्र देने से शीला का—उस सौदर्य का—अवलोकन तो कर लूंगा (याद करके) क्या कह गया ? अब वेचारी शीला मे सौदर्य कहा होगा ?· ·अस्पताल मे दाखिल हुए नौ दिन हो चुके हैं—पत्र आया है कि खून की कमी है, तो क्या मैं मिल सकूगा ? (आकाश की ओर देखकर) आज मेरी ऐसी मनोदशा क्यो हो गई है ? मेरे हृदय मे···हा वज्र से हृदय मे आशका क्यो उठ रही है ? (बैठकर) नही, मैं अवश्य जाऊगा। (सामने दीवार पर टगे चित्र की ओर देखकर) शीला, शीला मैं तुमसे मिलने आऊगा। (चुप होकर आंखों पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगता है)

वाहर से कोई घटी का बटन दबाता है। घटी शोर करने लगती है। शर्मा अपने भावो मे ही वहे जा रहे हैं। घटी पुन' वजती है। वे दरवाजा खोलते हैं। दरवाजा खोलते ही जैन प्रवेश करते हैं।

शर्मा (भाव बदलकर—हाथ मिलाते हुए) आइये जैन साहब अभी रात्रि के समय कैसे कष्ट किया ? (दिखावटी हसी हसता है)

जैन · वैसे ही कोई खास बात तो नही—आपसे बात करने चला आया था।

शर्मा : तशरीफ रखिये।

जैन . (बैठते हुए) हा तो प्रिंसिपल साहब ने क्या कहा ?

शर्मा · (भाव बदल कर) उसका नाम न लो जैन साहब।

जैन क्यो, ऐसी क्या बात हो गई ? आप तो उसे देवतुल्य मानते रहे हैं।

शर्मा : ठीक है, करारा धोखा खाया है मैंने अब तक। जिसे मैं देवता

समझता था वह दानव निकला। गाय का बाना पहने खूंख्वार · · ···

जैन . मैंने तो आपको कई बार कहा था कि उसके मीठे वचन, एवं उदारतापूर्ण कथन माया-जाल मात्र है।

शर्मा · (बीच मे बोलने हुए) और ऐसा जाल जिसने मेरी मति को भ्रमित कर रखा था।

जैन : तो अब समझ मे आया आपके कि ····

शर्मा . (श्री जैन के मुह को हाथ से बद करते हुए) अब रहने दीजिये इन बातो को। घावो पर नमक मत छिडकिये।

जैन : (हाथ हटाते हुए) अच्छा यह तो बताइये कि आखिर उसने क्या कहा ?

शर्मा : कहा क्या ? साफ इन्कार कर दिया कि जब तक आपके स्थान पर कोई आ नही जाता तब तक रिलीव नही करूगा।

जैन परन्तु भाभी की तबियत भी तो ठीक नही, आपको तो जाना ही होगा। (सोच कर) तो आप छुट्टी लेकर चले जाइये।

शर्मा यही तो बात है, छुट्टी के लिये लिखा तो उत्तर मिला—स्थानान्तरण-काल मे अवकाश नही मिल सकता—यह नियम है।

जैन (आश्चर्य से) क्या कहा ? छुट्टी नही मिलती ! अजीब आदमी निकला।

शर्मा : (मेज पर से उठ कर एक टकित पत्र श्री जैन को देते है)

जैन · (पढ कर आश्चर्य से) है-है ! यह क्या कर रहे हैं आप ? बुद्धिमान् होकर ···

शर्मा मिस्टर जैन आप अभी मेरे किसी काम मे हस्तक्षेप मत

कीजिये। मैं अब क्षमा चाहता हू।

[इसी बीच मे घण्टी बजती है। शर्मा दरवाजा खोलते है। पोस्टमैन तार देता है, वह हस्ताक्षर करके तार ले लेते हैं। तार को पढकर वे भयकर हसी हसते हैं एव बड-बडाते है।]

शर्मा ठीक है, उनके मन की साध पूरी हुई, अब मेरी मुराद भी पूरी होने वाली है।

जैन · (तार छीन कर पढते हैं तथा जड़वत् हो जाते हैं)····· ऐ ·· यह क्या ?

शर्मा (धम्म से बैठ जाते हैं)

जैन शर्मा साहब ·· ·· यह तो बडा ······

शर्मा (चुप रहते हैं, पुन हडबडा कर उठते है) मि० जैन ! दूर हट जाओ।

जैन क्या ?······· धैर्य से काम ले ।

शर्मा (अनसुनी करके चित्र की ओर देख कर) शीला,·· ·· · ठहरो मैं ऐसा उपाय करता हू जिससे तुम्हे शान्ति मिले ।

जैन (उन्हे धैर्य बधवाने के उद्देश्य से) शर्मा साहब···

शर्मा (बीच मे बोलते हुए) ठीक है····· क्या आप नही जानते कि मैं शीला को नही बचा सका, उसका इलाज नही करवा सका। वह ···

जैन . अब क्या उपाय है ?

शर्मा : उपाय ? उपाय मेरे पास है।

जैन : पर ऐसा करना उचित नही।

शर्मा : (आवेश मे आकर) जैन साहब आप चले जाइये। ··· चले जाइये अभी।

जैन : क्या कह रहे हैं आप ?

शर्मा ठीक कहता हू । हट जाओ आप मेरे मार्ग से । नही तो···

[बाहर जाने को उद्यत होते है । श्री जैन पकडना चाहते है पर वे छुडा कर तेजी से कमरे से बाहर हो जाते है ।]

जैन शर्मा साहब ! आप जा कहा रहे है ?

शर्मा (बाहर निकलते हुए) मिस्टर जैन मैं त्यागपत्र देने जा रहा हू और उसे भी·········

[जैन भी उनका पीछा करते हुए निकल जाते है ।]

[पटाक्षेप]

एक से एक बढ़कर

पात्र

फतेहचन्द	सेठ
वसन्तमल	सेठ का पुत्र
मुनीम	सेठ का मुनीम
किसनलाल	सेठ का समर्थक
प्रधानाचार्य	कॉलेज के प्रिंसिपल
रामलाल	सेठ करोड़ीमल का मुनीम
पोपटलाल	गन्धी (गान्धी)

[**स्थान** सेठ फनेहचन्द की हवेली । हवेली मे प्रवेश करते ही दाहिनी ओर दीवानखाना है जिसमे मखमली गद्दा बिछा हुआ है व बीच मे फोन रखा हुआ है। दरवाजे के सामने गोल तकिये का सहारा लेकर सेठ जी बैठे है । वे नगर के गण्य-मान्य सेठ समझे जाते हैं । पैसो के बल से ही वे चतुर समझे जाते है । बाप-दादा व अपने नाम से एक कॉलेज खोल रखा है जिसके सर्वेसर्वा वे स्वय हैं । उनके दाहिनी ओर एक-डेढ फुट की दूरी पर मुनीम बैठा हे । इनके सामने व अगल बगल मे कई प्रशसक जमे हुए है । घडी ग्यारह टकोरे लगा चुकी है । इसी समय कॉलेज के प्रधानाचार्य आते है ।]

प्रधानाचार्य : (प्रवेश करके) नमस्ते सेठ साहब ।

सेठ · आइये प्रिंसिपल साहब, विराजिये, कैसे आए ?

प्रधानाचार्य . अभी आपके यहा से फोन आया था ।

सेठ · (कुछ सोचकर) हा, इसलिए बुलवाया था कि कॉलेज का खर्च बढ गया है अत कुछ कमी कीजिये । (इधर उधर देखकर) पर यह ध्यान रखें कि ....

किसनलाल · प्रिंसिपल साहब भोले मालूम पडते है ।

सेठ : पर काम तो ढग से ही करना होगा ।

प्रधानाचार्य · मैं अपने काम मे कोई कमी नही देखता फिर भी आप मुझे सीख दे रहे है ।

किसनलाल · आप सेठ साहब का मतलब नही समझे ।

सेठ : हा, यदि आप नही जानते तो हमारे मुनीमजी से सीख लीजिये ।

प्रधानाचार्य . सेठ साहब ! यह .....

सेठ . (बीच मे बात काटकर) अच्छा तो इस विषय पर बाद मे बात करेगे । (कुछ सोचकर) हा तो कल जिनका इन्टरव्यू लिया था उनमे से तो किसी को रखना मुझे नही जचता ।

प्रधानाचार्य : परन्तु शिक्षको के बिना काम कैसे चलेगा ?

सेठ . काम तो ससार का चलता ही रहता है ।

मुनीम : फिर आपके कॉलेज मे तो गप्प-शप्प लगाकर सब अपना समय बिताते है और पैसे पकाते है । उनके लिए तो "सेठ मरे चाहे सेठानी, ब्राह्मण का सोने का टका तैयार है" वाली कहावत फिट बैठती है ।

किसनलाल : आप ठीक फरमा रहे है मुनीमजी ।

प्रधानाचार्य : पढाई क्यो नही होती ?

सेठ : पर पढाई के दिन ही कितने हैं ?

मुनीम : (हा मे हा मिलाते हुए) ठीक फरमा रहे हैं सेठ साहब ! कालेज का साल होता है छ महीनो का, महीना बीस दिनो का, दिन दो घण्टो का और घण्टा चालीस मिनट का ।

सेठ : मैंने तो अनुभव किया है न । कल मैंने 'इन्टरव्यू' लिया, कई पढ़े-लिखे आये थे पर उनकी योग्यता देखकर अचभित हो गया ।

किसनलाल · आपके सामने भला थोथी बाते थोडी चल सकती हैं ।

सेठ · सुनो तो सही, एक ने अपने नाम के आगे डॉक्टर लगा रखा

था ।

किसनलाल (उतावले होकर) तो क्या अपने यहा रोगिया का इलाज करवाना है ।

प्रधानाचार्य (टोक कर) किसनलाल तुम भूल कर रहे हो । वे सबसे अधिक पढे-लिखे व योग्य है । वे रोगियो के डॉक्टर नही अपितु साहित्य के है ।

सेठ वाह ! खूब कहा । क्या साहित्य भी कभी बीमार पडता है ?

प्रधानाचार्य उन प्रत्याशियो मे एक ही तो डॉक्टर है, बाकी तो एम० ए० पास हैं ।

सेठ क्या हुआ एम० ए० पास है ? है तो एक-एक विषय मे ही ?

किसनलाल (आश्चर्य से) क्या एक विषय मे ही ?

सेठ हा, मुझे भी सुनकर आश्चर्य हुआ । किसी ने अग्रेजी मे एम० ए० कर रखा है, किसी ने हिसाब मे, किसी ने हिन्दी मे तो किसी ने इतिहास मे ।

किसनलाल : तब तो पहले की पढाई बहुत अच्छी थी ।

सेठ सो तो थी ही । जब मै दसवी कक्षा मे पढता था तो ये सभी विषय एक साथ पढ़े थे ।

किसनलाल : आपकी बात जाने दीजिये । आप दसवी पास न होने पर भी आजकल के एम० ए० वालो से अधिक योग्य है । पहले की दसवी आजकल के एम० ए० क्लास के बराबर है ।

प्रधानाचार्य पर सेठ जी ····

सेठ (बीच मे बोलते हुए) पर-वर कुछ नही । अधिक कहे तो मैं एक काम कर सकता हू । मेरी भानजी के लडके ने इसी वर्ष एफ० ए० पास की है । उसे नियुक्त कर देता हू । है भी वह बडा सुशील ।

प्रधानाचार्य किन्तु कॉलेज मे पढाने के लिए कम से कम योग्यता

एम० ए० की मानी गई है। इससे कम योग्यता वाले की नियुक्ति नही हो सकती।

सेठ : नियुक्ति क्यो नही हो सकती ? क्या वह पढा नही सकता ?

प्रधानाचार्य . एफ० ए० पास कॉलेज मे कैसे पढा सकता है ?

सेठ क्यो नही पढा सकता ? एम० ए० पास एम० ए० को पढाता है तो क्या एफ० ए० वाला बारहवी कक्षा तक नही पढा सकता ?

किसनलाल : वह ग्यारहवी व बारहवी कक्षा के छात्रो को तो मजे से पढा देगा।

सेठ : यही तो मैं कहता हू कि उसे ग्यारहवी व बारहवी कक्षाओ के घण्टे दे दीजिये। कुछ समय मे अनुभव हो जावेगा।

किसनलाल : और आप तो जानते है कि आज बारहवी कक्षा मे तो पढाया ही क्या जाता है ?

प्रधानाचार्य : पर नियम भी ··

सेठ . (टोक कर) सब काम नियम से थोडे ही होते हैं ? आपको भी तो इन्कमटेक्स ऑफिसर साहब के कहने······। (रुक जाता है)

[इतने मे सफेद पगडी बाधे हुए रामलाल का प्रवेश]

रामलाल : (प्रवेश करके) राम-राम सेठ साहब।

सेठ राम-राम मुनीम जी ! कहिये कैसे कष्ट किया ?

रामलाल . सेठ जी ने भेजा है।

सेठ : (मुह पर उदासी के भाव दरसा कर) क्या बतावें, आपके सेठ करोडीमल के पुत्र मुक्तामल की मृत्यु का सुनकर बडा दु ख हुआ।

मुनीम : पर भगवान के आगे किसका जोर चलता है ?

रामलाल . दु ख तो अपने वालो को होता ही है। सेठजी पर तो दु ख का पहाड टूट पडा।

मुनीम : इससे अधिक और क्या दुःख हो सकता है ?

सेठ . अधिक दुःख करने से क्या होगा ? मैं तो खैर कच्चा मरना होने के कारण आ नही सका, कल वसन्त को ही बैठने भेज दिया था।

रामलाल : इसीलिए तो मुझे भेजा गया है।

सेठ · (आश्चर्य से) क्यो ? ऐसा क्या हुआ ?

रामलाल : कल वसन्तमल जी ने बैठक मे कहा कि बाबू मुक्तामल के क्या हो गया था ? एक ....

मुनीम (बीच मे बोलते हुए) इसमे क्या बुरा कहा ?

रामलाल : पर आगे तो सुनिये। उन्होने कहा कि एक हिसाब से तो अच्छा हुआ। आपको बहुत तग करता था। वह तो निहाल हो गया—आपके हाथो मे चला गया।

[यह सुनकर दीवानखाने मे बैठे लोग एक दूसरे की ओर ताकने लगते हैं।]

सेठ : यह तो उसने बडी बेवकूफी की। सेठ साहब से मेरी ओर से क्षमा माग कर कह देना कि आयन्दा ऐसी गलती नही होगी। आयन्दा आपके घर मे किसी जवान की मौत होगी तो भी मै ही बैठने के लिए आऊगा, उसे किसी हालत मे नही भेजूगा।

[यह सुनकर रामलाल उठकर शीघ्रता से प्रस्थान करने लगता है। वह जाते हुए बडबडाता है कि यहा तो उल्लुओ की जमात मे सब एक से हैं।]

सेठ : (रामलाल के चले जाने के उपरान्त) देखा मुनीम जी, क्या युग आया है ?

मुनीम : क्या बतावे सेठ साहब, घोर कलियुग आ गया है।

किसनलाल : देखिये छोटी-सी बात का बतगड बना दिया। मुनीम रामलाल को उपालम्भ देने भेज दिया।

मुनीम . शर्म नही आती ऐसे लोगो को ।

सेठ : पर मैंने भी ठीक ही कहा। लोगो की बातो का तो आजकल विश्वास ही नही करना चाहिए। जब मुक्तामल जीवित था तब करोडीमल जहा भी मिलते तो उसके रोने रोते ।

मुनीम : ठीक फरमा रहे हैं आप। जब मिलते उसके ही रोने रोते। कभी कहते चोर है, कभी कहते जुआ खेलता है, कभी कहते कि ऐसे नालायक लडके का तो मर जाना ही अच्छा है।

सेठ . और उसके मरने के बाद अब दिखावटी शोक दिखलाते हैं। वसन्त ने सच्ची बात कह दी तो बुरा मान गए। उपालभ कहलवाया ।

मुनीम · यह नही सोचते कि उसके मरने से पुलिस-कचहरी के चक्कर लगाने से तो छुटकारा मिल गया। नही तो ऐसे कुपुत्र के कारण वकीलो के घर चक्कर लगाते-लगाते हैरान हो जाते ।

सेठ . इतना ही क्यो, क्या कभी उन्हे नही फंसा देता?

[इतने मे इत्र-फुलेल की पेटी बगल मे दबाये गन्धी पोपटलाल का प्रवेश ।]

गन्धी : (प्रवेश करके) जय श्री कृष्ण सेठजी ।

सेठ : जय श्री कृष्ण । आइये, कहा से आए हैं?

गन्धी आया तो कन्नौज से हू। आपका नाम सुनकर बहुत बढिया इत्र-फुलेल लाया हू । सोचा, कुछ बिक्री हो जायेगी।

सेठ (घडी देखकर) अरे, तो सवा बारह बज रहे हैं ? (गन्धी को लक्ष्य कर) थोडी देर ठहरिये, मैं अभी आता हू।

[घर मे चला जाता है। इसी समय घर मे से वसन्तमल आता है।]

वसन्तमल : (प्रवेश करके इधर-उधर दृष्टिपात करता है, फिर गान्धी से) आप इत्र बेचते हैं ?

गन्धी . जी ।

वसन्तमल तो कोई अच्छा-सा दिखलाइये । अच्छा होगा तो ले लेंगे ।

गन्धी (फवा बनाकर देते हुए) देखिये यह गुलाब की रूह है । सबसे बढिया है ।

वसन्तमल . (हाथ मे लेकर मुह मे डाल कर चूसने लगता है, फिर एक क्षण मे ही फवा फेंक कर थू थू करते हुए) गान्धी जी, यह क्या इत्र है ? मेरा तो मुह खराब करा दिया आपने, कै-सी हो रही है ।

गन्धी · (हडबडाकर अपनी पेटी बगल मे दबाते हुए) अच्छा तो बढिया इत्र लेकर उपस्थित होऊगा ।

[गन्धी चलने का उपक्रम करता है । वसन्त घर मे चला जाता है । उसी समय सेठ किसी आवश्यक कार्यवश दीवानखाने मे आता है ।]

सेठ (गन्धी को हडबडा कर जाते हुए देखकर) क्यो गान्धीजी इतने शीघ्र कैसे चल दिये ? हमारे लायक कोई बढिया इत्र हो तो दिखलाइये ।

गन्धी : (बैठकर पेटी खोलता है । फिर फवा बनाकर देते हुए) लीजिये, यह गुलाब की बढिया से बढिया रूह है । इसका फवा बनाकर कुवर साहब को दिया था ।

सेठ · उसे पसन्द नही आया होगा । यह तो अपनी-अपनी पसन्द है । मुझे पसन्द आयेगा तो कुछ ले लूगा ।

गन्धी : इसमे पसन्द-नापसन्द जैसी तो कोई बात नही है । इससे बढिया रूह तो कही मिल ही नही सकती । कुवर साहब तो फवे को चूसने लगे इसलिए·········

सेठ (आश्चर्य से) क्या कहा ? ···चूसने लगा ? बेवकूफ है